इकाई 6 रामनरेश त्रिपाठी और उनकी कविता

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 युग-परिवेश

6.3 जीवन-वृत्त एवं व्यक्तित्व

6.4 रामनरेश त्रिपाठी का रचना-संसार

6.5 काव्य सौन्दर्यः प्रमुख स्वर

- 6.5.1 राष्ट्रीय-भावना का प्रसार
- 6.5.2 सामाजिक-चेतना एवं सुधार दृष्टि
- 6.5.3 प्रेमानुभूति की उदात्तता
- 6.5.4 प्रकृति-प्रेम
- 6.5.5 सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक चेतना
- 6.5.6 लोक-साहित्य का मर्म

6.6 रचना-विधानः विविध आयाम

- 6.6.1 काव्य भाषा
- 6.6.2 लाक्षणिक एवं व्यंजनात्मक शैली
- 6.6.3 लोकोक्ति एवं मुहावरे
- 6.6.4 अप्रस्तुत-विधान
- 6.7.5 छन्द-विधान

6.7 रामनरेश त्रिपाठी का योगदान

6.8 सारांश

6.9 शब्दावली

6.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

करुणा- सिक्त व्यक्तित्व, गांधीवादी विचार एवं मानवतावदी दृष्टि से सम्पन्न द्विवेदी-युगीन इस राष्ट्रीय-चेतना के ऐतिहासिक एवं शाश्वत मूल्यों वाले कवि रामनरेश त्रिपाठी पर लिखी गई इस इकाई के अध्ययन से आपः

- रामनरेश त्रिपाठी के सृजन-युग की परिस्थितियों एवं परिवश के विषय में जान सकेंगे;
- त्रिपाठी जी के जीवन, व्यक्तित्व एवं रचना-संसार को समझ सकेंगे;
- कवि के काव्य-संसार में गूंजने वाले राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, लौकिक, ऐतिहासिक एवं प्रेम तथा प्रकृति संबंधी स्वरों को पहचान सकेंगे,

- त्रिपाठी जी के रचना-विधान में मिलने वाली भाषा, शैली, लोकोक्ति-मुहावरे से परिचित होंगे;
- अप्रस्तुत-विधान तथा छन्द-विधान के वैशिष्ट्य को समझ सकेंगे; तथा
- युगीन-काव्य धारा एवं हिंदी-साहित्य में रामनरेश जी की भूमिका समझ सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

पंडित रामनरेश त्रिपाठी, द्विवेदी युगीन स्वच्छन्द-प्रेमधारा के उन प्रमुख कवियों में से एक हैं जिन्होंने आधुनिक हिंदी-साहित्य की मज़बूत बुनियाद भरने का अभूतपूर्व कार्य किया है। सन् 1912 से 1946 तक के अभूतपूर्व साहित्य युग में नए विषय, नई प्रतिपादन शैली, कोमलता एवं चारुतापूर्ण भाषा, भावों की गहनता एवं उनके विश्लेषण की मार्मिक अभिव्यक्ति, आदर्शों की छाया में जीवन के मर्म को छूने वाले भाषिक- चित्र तथा व्यंजना शक्ति के बल पर उदात्त विचारों का प्रतिपादन सभी को इस विकासमान-साहित्य में पग-पग पर देखा जा सकता है। श्रीधर पाठक, सियारामशरण गुप्त, मुकुटधर पाण्डेय, माखनलाल चतुर्वेदी, गोपालसिंह तथा मैथिलीशरण गुप्त आदि बहुत से कवियों ने साहित्य एवं समाज के लिए जो परिवेश तैयार किया उसमें प्रभावपूर्ण एवं भावपूर्ण कविता का सृजन हुआ। इस कविता में साधारण प्रेम, राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं सामाजिक जागृति, लौकि संस्पर्श, वीरता,भक्ति एवं त्याग-भावनाओं जैसी मानव जीवन की उच्चवृत्तियों को अभिव्यक्ति मिली। प्रकृति की मनोहारी छटा अब रीतिकाल परिवेश के बंधनमय वातावरण से निकलकर, परम्परागत रूढ़ियों को तोड़ते हुए उन्मुक्त एवं स्वच्छन्द आंगन में विहार करने लगी। महावीर प्रसाद द्विवेदी-मंडल से बाहर रहकर उत्कृष्ट सृजन की अमूल्य निधि देने वाले रामनरेश त्रिपाठी जी के काव्य में भी इन समस्त गतिविधियों का समावेश हुआ और उन्होंने इनके उत्कृष्ट वर्णन से अपनी स्वच्छन्दतावादी दृष्टि को स्पष्ट ही नहीं प्रमाणित भी किया है। द्विवेदी युगीन कविता की समस्त विषम परिस्थितियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती यह कविता-धारा अन्याय और अपमान के प्रति विद्रोह ही नहीं करती, तत्कालीन इतिहास का संपूर्ण बोध एवं दस्तावेज़ी-ब्यौरा भी पाठक तक पहुँचाती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि त्रिपाठी जी का काव्य पौरुष का काव्य है। गांधीवादी विचारों का आदर्श उनके साथ है, किन्तु कायरता को बढ़ावा देने वाली शक्ति उन्हें स्वीकार्य नहीं। राष्ट्रीय भूमि, प्रकृति एवं सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की धरोहर से त्रिपाठी जी का संस्कारगत मोह है, जिसे उनके पूरे साहित्य में देखा भी जा सकता है। काव्य एवं गद्य, चरित एवं व्यंग्य, शिक्षा एवं चित्र, इतिहास एवं समालोचना, संपादन एवं संग्रह तथा संस्कृति एवं राजनीति आदि अनेकों क्षेत्रों में उनकी सृजनात्मक-प्रतिभा के अद्‌भुत-वैशिष्ट्य का परिचय मिलता है। अपने संपूर्ण रचना-संसार में वे जागृति के साहित्यकार जान पड़ते हैं। अतः जीवन का सर्वांगीण चित्रण राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ में करने वाले इस भविष्योन्मुखी कवि का विस्तृत अध्ययन हम इस इकाई में कर रहे है।

6.2 युग-परिवेश

यह सर्वमान्य सत्य है कि साहित्यकार व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं इन सभी के जीवन-परिवेश से बचकर नहीं चल सकता। कवि या साहित्यकार के काव्य और साहित्य-संसार को समाज की प्रत्येक घटना आन्दोलित करती है। सामाजिक प्राणी होने के कारण साहित्यकार का सामाजिक घटनाओं से प्रभावित होना सहज ही नहीं अनिवार्य भी है। इन्हीं सामाजिक अनुभवों से साहित्यकार के प्रतिपाद्य में सजीवता आती है। युगीन परिस्थितियाँ एवं परिवेश कवि को गति एवं ज्ञान प्रदान करते हैं और इन्हीं से उसे लोकहृदय की पहचान भी हो पाती है। रामनरेश त्रिपाठी का युग भी ऐसा ही युग था, जो संवेदनशील कवियों एवं लेखकों को अपने परिस्थितिजन्य परिवेश के दायरे में चाहे-

अनचाहे खींचता और आकर्षित करता था। यहाँ हम त्रिपाठी जी के साहित्य-सृजन की जड़ों को सींचने वाले और बीज-प्रस्फुटन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले उसी युग-परिवेश की चर्चा करेंगे।

राजनैतिक-परिवेश

भारतीय राजनीति एवं राष्ट्रीय जीवन में सन् 1857 की क्रांति के बाद सजीवता और साहस का प्रचार होने लगा था। देशभक्ति और राष्ट्रीय जागृति का लक्ष्य लेकर चलने वाली इस क्रांति ने समस्त देश को झकझोर कर विद्रोह एवं जन-संघर्ष की राह दिखाई परिणामतः अंग्रेज़ों ने जनता पर अत्याचार और दमन की राह अपनाई। एक तरफ तो अन्याय, अत्याचार, अपमान और शोषण का यह चक्र था जिसमें भारत की गरीब जनता पिस रही थी और दूसरी तरफ बौद्धिक वर्ग अंग्रेज़ों के आगमन पर अपने को धन्य महसूस कर रहा था। भारतेन्दु की ये प्रशस्ति भरी पंक्तियाँ इसी का प्रमाण हैः

स्वागत-स्वागत धन्य तुम भावी राजाधिराज
भई सनाथ भूमि यह परसि चरण तुव आज।

किन्तु प्रशस्ति का यह भ्रम शीघ्र ही टूटने लगा। पश्चिमी-सभ्यता के समता, बंधुत्व, स्वातंत्र्य एवं प्रजातंत्र आदि तथाकथित मानवीय मूल्यों का स्वप्न भारतेन्दु युग में ही बिखरने लगा। आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक शोषण की वास्तविकता नग्न होने लगी। अंग्रेज़ों की स्वार्थ-लिप्त व्यापारिक एवं साम्राज्यशाही नीतियाँ, उनकी शोषण करने की विविध चालें तथा धोखे भरे इरादे स्पष्ट होने लगे। ऐसे में राष्ट्रीयता की भावना धीरे-धीरे बल पकड़ने लगी। ज़मीदारीं व्यवस्था को भारतीयों ने नया रूप देना प्रारम्भ कर दिया। विविध स्तरों पर आर्थिक शोषण सह रही जनता ने अपने अधिकारों को मज़बूत करने के संदर्भ में सोचना प्रारम्भ कर दिया। अंग्रेज़ों की कपट नीति ने धार्मिक स्वातंत्र्य का झांसा देकर हिन्दू-मुस्लिम जनता के बीच तनाव पैदा कर दिया। अंग्रेज़ी शिक्षा का प्रचार-प्रसार बढ़ाकर परम्परागत शिक्षा व्यवस्था को कमज़ोर बनाया जाने लगा। परिणामतः शिक्षित वर्ग में स्वाभाविक प्रतिक्रिया हुई और उनमें से कुछ विशिष्ट प्रतिभाओं ने अंग्रेज़ी शिक्षा तथा पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति से घनिष्ठ सम्पर्क रखकर भी भारतीय परतंत्रता और आर्थिक शोषण के खिलाफ असंतोष की भावना जगाना शुरू कर दिया। छोटी-मोटी बगावत और विद्रोह होने लगे। सन् 1885 में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई और धीरे-धीरे अंग्रेज़ों के दमन-चक्र तथा बौद्धिक भारतीय जनता के बीच असंतोष एवं तनाव बढ़ने लगा।

इस पूरी स्थिति एवं परिस्थितिजन्य- परिवेश ने प्रत्येक भारतीय साहित्यकार को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया। राष्ट्रीय चेतना एवं जागृति की भावना यहीं से तीव्र होकर फैलने लगी। राजनैतिक क्षेत्र में लोकमान्य तिलक, गांधी, सुभाष तथा लाजपतराय आदि अनेक जन-नेताओं ने जन-जागरण के मोर्चे संभाले। इधर साहित्यकार-सिपाही ने अपनी कलम को संभाला और हिन्दू-मुस्लिम एकता, जातपात-विरोधी भावना, हरिजन उद्धार, स्वदेशी आंदोलन, पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं की भावना, राजनैतिक जननेताओं के प्रति श्रद्धा और आदर भाव, जेल को मंदिर समझने का पवित्र-भाव, परतंत्रता की बेड़ियाँ काट फेंकने का संकल्प तथा मातृभूमि की सेवा के लिए व्याकुल देश-भक्ति - सभी को साहित्य का विषय बनाकर इस जागृति-यात्रा में भाग लिया। कवि रामनरेश त्रिपाठी ने इस जागरण - अभियान में सक्रिय भूमिका निभाई। ''वह दंश कौन-सा है'' जैसी लम्बी कविता तथा ''पथिक'', ''मिलन'', एवं ''स्वप्न'' जैसी काव्य-कृतियों में ये भाव सहज ही देखे जा सकते हैं।

सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं बीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में अनेक सामाजिक परिवर्तन हो रहे थे। सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक आंदोलनों ने देश को उद्वेलित कर दिया था।

यवनों के युग से चले आ रहे अन्धविश्वास एवं कुरीतियों समाज की जड़ें खोखली कर रहे थे। परतंत्रता के शिकंजे में फंसा समाज तेजी से पतन की ओर उन्मुख था। अत्यधिक धार्मिक वृत्ति ने बौद्धिक वर्ग को भी जकड़ लिया था। आर्य समाज, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, थियोसोफीकल सोसाइटी, रामकृष्ण मिशन आदि संस्थाओं ने धर्म का मूलभूत चिन्तन प्रारम्भ कर दिया था। शोषण, महामारियाँ, ज़मीदारों के जुल्म, सूदखोर-महाजनों की निर्दयता, ऋण के सागर में डूबता किसान- सभी युगीन विभीषिकाओं के साक्षी हैं। श्रमिक वर्ग भी सुनियोजित शोषण- व्यवस्था में फंस चुका था। बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, सती-प्रथा, तांत्रिक-पूजा तथा बलि जैसी कितनी ही संकीर्णताएँ समाज को घेरे थीं। हिन्दू-मुसलमान-इसाई आदि में पारस्परिक भेदभाव था। ऐसे में उदारता, सहिष्णुता एवं सर्वधर्म स्वभाव की प्रवृत्ति भी जन्म ले रही थी। रामनरेश त्रिपाठी की ''अन्वेषण'' कविता भी धर्म के इसी बुनियादी चिंतन को विषय बनाकर सृजित हुई-

तू जान हिन्दुओं में, ईमान मुस्लिमों में,
तू प्रेम क्रिश्चियन में है, सत्य तू सज्जन में।

वास्तव में, सामाजिक एवं आर्थिक संकट के इस दौर में साहित्यकारों के हृदय में भी असंतोष और तपन थी। उनकी यह तपन विद्रोह बनकर साहित्य में ढली। स्त्री पुरुष के प्रणय भाव को वर्जित मानना, नारी के त्याग की पूर्व-निश्चित धारणा, समाज में पुरुष की प्रधानता तथा सामाजिक आदान-प्रदान के असंतोषजनक तौर-तरीके- सभी ने लेखक समाज को झकझोंरा। एक तरफ पेट भरने से लाचार निम्न वर्ग था तो दूसरी तरफ ज़मींदार, सरकारी-वकील, मिल-मालिक तथा अन्य तथाकथित संभ्रान्त उच्च श्रेणी के व्यक्ति, जो स्वार्थ-लिप्सा में डूबे थे। त्रिपाठी जी ने विदेशी शासन से लाभ उठाने वाले इस वर्ग पर करारा व्यंग्य करते हुए लिखा है-

देश-प्रेम ऐसे पवित्र स्वर्गीय कार्य-साधन को,
बना लिया व्यापार परम आराध्य मानकर धन को,
त्रस्त भूप से मान दान पाने की अभिलाषा से,
कई प्रजा के हैं हितेच्छु निज उन्नति की आशा से।

इसी प्रकार, वे अपने तीनों प्रबंध काव्यों में स्त्री-पुरुष के प्रणय भाव को ही प्रमुखता देते हैं, जबकि इस युग में पावन भाव को वर्जित माना जाता था।''पैसा-परमेश्वर'' नामक नाटक में त्रिपाठी जी इन धन-लोलुपों को नग्न करते हैं। अतः उस युग में बेरोज़गारी, गरीबी, शोषण, धनाभाव में तड़पता कृषक एवं श्रमिक, देशी व्यापार का हनन, विदेशी व्यापार का आरोपण, स्वदेशी कच्चे माल का निर्यात- सभी ने सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को दुर्व्यवस्था के कगार पर ला खड़ा किया था। ऐसी विकट स्थिति पर लिखित त्रिपाठी जी की ये पंक्तियाँ भी द्रष्टव्य हैं-

धधक रही सब ओर भूख की ज्वाला है घर घर में,
मांस नहीं है, निरी सांस है शेष अस्थि पंज़र में।

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिवेश

उन दिनों अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रचार ने हमारी संस्कृति पर आघात करना प्रारम्भ कर दिया था। हम भारतीय अपने ही घर में विदशी या मेहमान दिखने लगे थे। डॉ. श्रीकृष्ण लाल लिखते हैं- ''भारतीय, प्राचीन संस्कृति और साहित्य की अेर उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे और सभी अंग्रेज़ी वस्तुओं पर असीम श्रद्धा रखते थे। मैक्समूलर और मोनियर विलियम्स इनके संस्कृत साहित्य के समालोचक और शिक्षक थे। अंग्रेज़ी विद्वानों की सम्मतियाँ इनके लिए वेद-काव्य थीं।'' (आधुनिक हिंदी साहित्य का विकास; पृष्ठ 21)। अंग्रेज़ शासकों ने कपटपूर्ण नीति का प्रयोग कर भारतीय जनता को पाश्चात्य संस्कृति के रंग में ऐसा रंगा और डुबोया कि आज भी हम उससे मुक्त नहीं हो सके हैं। धीरे-धीरे श्रद्धा और विश्वास

के धरातल पर खड़ी संस्कृति के स्थान पर बौद्धिक धरातल वाली संस्कृति छाने लगी। बंगाल और गुजरात से सांस्कृतिक नवजागरण का श्रीगणेश हुआ। डॉ. शिवदानसिंह चौहान ने लिखा भी है- ''राष्ट्रीय जागरण की प्रथम चेतना सुधार आंदोलनों के रूप में मुखरित हो उठी, सांस्कृतिक नवजागरण, कला और साहित्य का अभिनव विकास और उन्मेष भी उन सुधार आंदोलनों के माध्यम से ही हुआ''। (हिंदी गद्य साहित्य; पृष्ठ-34)। देश की इसी दशा से प्रेरित होकर साहित्य ने भी अपना रुख बदला। काव्य के लिए खड़ी बोली के प्रयोग का संघर्ष प्रारम्भ हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी के नेतृत्व में चले इस अभियान ने अपार सफलता हासिल की। मैथिलीशरण गुप्त की प्रबंध रचना ''जयद्रथ-वध'', फिर ''भारत-भारती'', हरिऔध जी का महाकाव्य ''प्रिय-प्रवास'' और इस प्रकार अन्य कई काव्य-कृतियाँ इस दिशा में किए गए प्रयासों का सफलतम प्रमाण बनीं। द्विवेदी युगीन काव्य में आदर्शवादी, नीतिवादी, उपदेशवादी तथा भाव प्रधान प्रवृति को महत्व मिला तो श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, मुकुटधर पाण्डेय, माखनलाल जी, गोपाल सिंह जी एवं सियारामशरण जी के काव्य में छायावादी साहित्य की स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति के बीच प्रस्फुटित होने लगे थे। प्रकृति-प्रेम की उत्कट अभिव्यक्ति हुई । द्विवेदी युगीन कविता और छायावादी कविता के बीच की कड़ी बना त्रिपाठी जी का साहित्य। इस प्रकार संक्षिप्त परिवेश परिचय से यह स्पष्ट होता है कि युगीन परिस्थितियों ने कवि एवं साहित्यकार की प्रतिभा को जागृत कर संघर्ष, विद्रोह एवं चेतना से जोड़ा। अतः परिवेश और परिस्थितियों ने साहित्यकार को प्रेरित ही नहीं बाध्य भी किया और अपने साथ-साथ ले चलीं, तो दूसरी तरफ साहित्यकार ने भी परिस्थितियों के स्वरूप परिवर्तन एवं दिशा-निर्धारण में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई।

6.3 जीवन-वृत्त एवं व्यक्तित्व

पंडित रामनरेश त्रिपाठी जी का जन्म सिंगरामऊ राज्य (जौनपुर-सुल्तानपुर मार्ग) के कोइरी नामक ग्राम संवत् 1946 अर्थात् 4 मार्च सन् 1889 को हुआ था। इनके पिता का नाम पंडित रामदत्त त्रिपाठी था। धार्मिक वृत्ति के इस परिवार में रामकुमार, रामनाथ एवं रामनरेश नाम के तीन पुत्रों ने जन्म लिया, जिनमें रामनरेश जी सबसे छोटे थे। कृषकों का दारिद्रय और अभावों का दुखमय जीवन उनका व्यक्तिगत अनुभव था। तीनों भाइयों में अपार स्नेह था और तीनों ही अत्यन्त परिश्रमी एवं जुझारू व्यक्ति थे।

रामनरेश त्रिपाठी जी के पिता खेती-बाड़ी तथा नौकरी से जीवन-यापन करते थे। वंशानुगत धर्म-विश्वास तथा मानस प्रेम इन्हें विरासत में मिला। परिवार की आर्थिक दशा अच्छी न थी। एक ही बैल था इसलिए कभी-कभी इनके बड़े भाई दूसरे बैल के स्थान पर स्वयं कंधा लगाते थे। दुःखों के इसी अनुभव-संसार ने उन्हें निर्धनों एवं कृषकों के प्रति दया-भाव सम्पन्न बनाया।

पहले उर्दू पाठशाला में और फिर हिंदी स्कूल में शिक्षा, पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन, स्वतंत्रता सेनानियों के भाषण में रुचि, पत्रिकाओं में तुकबन्दी-लेखन एवं प्रकाशन, नवीं कक्षा के बाद शिक्षा से वंचित होकर भी स्वअध्याय से गुजराती, बंगाली, उर्दू, अंग्रेज़ी तथा संस्कृत आदि भाषाओं में दक्षता हासिल की और आगे चलकर पाठशाला में अध्यापन, उदयराजी नामक कन्या से विवाह, तीन पुत्र तथा तीन कन्याओं की प्राप्ति, अस्वस्थता के कारण राजस्थान प्रस्थान और मारवाड़ी परिवार में बच्चों को पढ़ाना आदि चलता रहा। यहीं ''हिंदी महाभारत'', ''प्रार्थना'','' मारवाड़ी मनोरंजन'' तथा ''कविता-विनोद'' का लेखन किया और सन् 1915 में पुनः प्रयाग लौटे।

इसी प्रकार, प्रमुख नेताओं एवं स्वतंत्रता सेनानियों से मिलना-जुलना, देशभक्ति का जुनून, पिता की मृत्यु, परिवार-पालन एवं साहित्य सेवा का दायित्व निर्वाह करते हुए 1917 में

पहला खंडकाव्य ''मिलन'' छपा। फिर हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रचारमंत्री बने, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का कार्यभार संभाला। गांधी जी एवं लाला लाजपतराय के साथ सत्याग्रह में भी भाग लिया, जेल गए और प्रसिद्ध कविता ''अन्वेषण'' लिखी। प्रयाग में हिंदी मंदिर की स्थापना ग्राम गीतों का संग्रह, काश्मीर यात्रा, 1938 में हिन्दुस्तानी कोश लेखन तथा अन्य विधाओं में रूचि जागी। हिन्दुस्तानी अकादमी ने ''पथिक'' को पुरस्कृत किया। उत्तर प्रदेश सरकार ने कविता कौमुदी (पाँच भाग) के लिए पुरस्कार दिया। सुल्तानपुर जेल के निरीक्षक भी रहे। और फिर सन् 1940 के बाद कई पुस्तकें लिखीं।

इस प्रकार त्रिपाठी जी का जीवन एक संघर्षमय, साधारण व्यक्ति का असाधारण जीवन था। शालीन तथा स्वाभिमानी व्यक्तित्व वाले त्रिपाठी पर आदर्शवाद का गहरा प्रभाव था। गांधी जी के सिद्धातों के वे प्रचारक थे। स्वतंत्रता से जूझ रहे भारतीयों की शक्ति एवं जीवटता का बखान करते हुए उन्होंने लिखा था-

सत्य कहने से न रुकती जीभ है,
कांपते क्यों हो? इसे ही काट लो।
मैं कलम हूँ, एक मेरी जीभ से,
क्या करोगे जब बढ़ेंगी सैकड़ों।।

गाँव की शान्ति में सादगी का जीवन जीने वाले रामनरेश जी मुँहफट और अक्खड़ थे। खुशामदी उन्हें पसंद न थी। सत्यवादिता उनका मूल मंत्र था। परिश्रम बिना प्राप्त होने वाली कोई भी वस्तु उन्हें स्वीकार्य न थी। प्रकृति से उन्हें अपार प्रेम था। हँसी और व्यंग्य के कारण वे सभी को प्रिय थे। क्रोध और उद्विग्नता उनकी कमज़ोरी थे, किन्तु इसे वे साहित्यिक व्यंग्य के माध्यम से अधिक अभिव्यक्त करते थे। विनय की उदात्त भावना को मुखर करती कवि की यह प्रार्थना द्रष्टव्य है जिसने समग्र भारत ही नहीं, समग्र जगत को भी मंत्र मुग्ध कर दिया है।

हे प्रभो आनंददाता! ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गणों को दूर हमसे कीजिए।
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीरव्रत धारी बनें।

12 जनवरी, सन् 1962 को प्रयाग में सरस्वती का हीरक-जयंती महोत्सव था। त्रिपाठी जी अस्वस्थ थे, परन्तु हिंदी जगत से ससम्मान प्राप्त निमंत्रण को नकार न सके। दूसरे ही दिन स्वास्थ्य बिगड़ा और दिल का दौरा पड़ गया। उपचार हुआ किन्तु अन्तः 16 जनवरी, सन् 1962 ई. को प्रातः साढ़े छह बजे उन्होंने अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया। साहस, सच्चाई, मित्रता और कर्मठता का दूत चला गया। श्री इंदरराज बैद ने त्रिपाठी जी के समग्र व्यक्तित्व को ध्यान में रखकर ठीक ही कहा है-

''वस्तुतः ग्रह एक ऐसे समर्पित रचनाकार की कहानी है, जिन्होंने लगभग पैंतीस बरसों तक भाषा और साहित्य की अविराम साधना की थी। त्रिपाठी जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। वे राष्ट्रीय भावधारा के कवि थे, यथार्थ ग्राही कथाकार थे, सामाजिक चेतना के संदेशवाहक नाटककार थे। बाल साहित्य के तो वे आदि आचार्य ही माने जाने हैं। हिंदी में ग्राम-गीतों का संग्रह उनके सारस्वत अध्यवसाय का जीवन्त प्रमाण है। प्राइमर से लकर शब्दकोशों तक के निर्माण में उन्होंने अपनी असाधारण दक्षता का परिचय दिया था। अपनी शताधिक कृतियों से उन्होंने भारती की पुष्कल अर्चना की। साहित्य की कोई ऐसी विधा नहीं, जिसमें उन्होंने सर्जन न किया हो। वे सचमुच द्विवेदी युगीन साहित्यिक समुदाय की अग्रिम पंक्ति को सुशोभित- गौरवान्वित करने वाले मनीषी साहित्य निर्माता थे।'' (रामनरेश त्रिपाठी; पृष्ठ 20)

6.4 रामनरेश त्रिपाठी का रचना-संसार

बहुमुखी प्रतिभा के समर्थ साहित्य-सृष्टा पंडित रामनरेश त्रिपाठी जी सन् 1912 से सन् 1962 तक 50 वर्ष लगातार लेखन से जुड़े रहे। साहित्य के अनेकानेक अंशों और विधाओं पर साधिकार लिखने वाले त्रिपाठी जी कवि, नाटककार, कहानीकार एवं उपन्यासकार, कोशकार, टीकाकार, आलोचक,सम्पादक, चरित लेखक, व्यंग्य लेखक, बाल साहित्यकार, शिक्षण-साहित्य लेखक, इतिहास लेखक, संग्राहक, सूक्तिकार, वैयाकरण एवं भाषाविद, ज्ञान साहित्यकार, यात्रावृत्तन्तकार, तो थे ही साथ ही संगीत, विज्ञान, अनुवाद, संस्कृति, राजनीति एवं ग्राम जीवन सम्बन्धी लेखन मोर्चों पर भी एकसाथ तैनात रहे। खड़ी बोली को काव्य की भाषा के रूप में सजाने-संवारने वालों में अन्यतम स्थान के अधिकारी त्रिपाठी जी निश्चित ही व्यापक फलक एवं विस्तृत भूमी के साहित्यकार हैं। आधुनिक हिंदी काव्य में डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने लिखा भी है- ''अतः साहित्य के जितने अंगों पर त्रिपाठी जी ने रचना की है, उतने अंगों पर साहित्य के किसी लेखक की लेखनी ने काम नहीं किया। इस क्षेत्र मे त्रिपाठी जी अद्वितीय हैं''। (पृष्ठ-74)

त्रिपाठी जी के इतने व्यापक रचना-संसार को वर्गीकरण के धरातल पर उतारना भी अपने आप में एक चुनौती का कार्य है। यहाँ हम उनके समग्र साहित्य को कुछ भागों में बाँटकर एक संक्षिप्त-रूपरेखा प्रस्तुत कर रहे हैं:

मौलिक साहित्य सृजनः

i) **काव्यः** क) मिलन, पथिक एवं स्वप्न जैसे खंडकाव्य।
ख) कविता-विनोद, आर्य संगीत शतक, मारवाड़ी-मनोरंजन, क्या होमरूल लोगे तथा मानसी आदि मुक्तक काव्य-संग्रह

उपन्यासः वीरांगना, वीरबाला, मारवाड़ी और पिशाचिनी, सुभद्रा तथा लक्ष्मी आदि

चरित लेखनः दमयन्ती चरित, पृथ्वीराज चौहान, पद्मावती, गांधी जी कौन हैं, तीस दिन मालवीय जी के साथ तथा जमनालाल बजाज आदि।

नाटकः जयंन्त, प्रेमलोक, अजनबी, बा और बापू तथा कन्या का तपोवन आदि।

व्यंग्यः स्वप्नों के चित्र तथा दिमागी ऐय्याशी आदि।

ii) **बाल-साहित्यः** काव्यः बालक सुधार शिक्षा, मोहन भोग, खोजो खोज निकालो, मोतीचूर के लड्डू तथा वानर-संगीत आदि।

गद्यः महात्मा बुद्ध, अशोक, चंदशेखर, हरिश्चन्द्र, चुड़ैल रानी तथा चटक-मटक की गाड़ी आदि

चित्रात्मक रचनाएँः गुपचुप कहानियाँ और कहानी के आदि

शिक्षा रचनाएँः गाँधी ताश जवाहर पत्ता, हिंदी प्राइमरी, हिंदी ज्ञानोदय तथा कन्या बोधिनी आदि।

साहित्य-इतिहासः हिंदी का संक्षिप्त इतिहास और उर्दू जुबान का संक्षिप्त इतिहास आदि।

समालोचनाः तुलसीदास और उनकी कविता तथा तुलसी और उनका काव्य आदि।

टीकाएँ : भूषण ग्रंथावली, अयोध्या काण्ड, श्रीरामचरित मानस, जानकी मंगल, सुदामाचरित तथा शिवा-बावनी आदि।

संपादनः कविता-कौमुदी (छह खंड), सूरदास की विनय पत्रिका, रहीम तथा सुकवि कौमुदी आदि।

पत्रिका-संपादनः कवि-कौमुदी, बानर तथा उद्योग आदि।

संग्रहः नीति शिक्षावली, नीति के श्लोक, नीति रत्नावली तथा मानस की सूक्तियाँ आदि।

भाषा एवं कोशः हिंदी पद्य रचना, हिंदी शब्द कल्पद्रुम, हिंदी-हिन्दुस्तानी, हिन्दुस्तानी कोश तथा हिंदी मुहावरे आदि।

यात्रा-वृत्त साहित्यः उत्तरी ध्रुव की भयानक यात्रा।

संगीतः अभिनव-संगीत।

राजनीतिः देश का दुःखी अंग।

संस्कृतिः हिंदी महाभारत तथा मानस के पाँच पात्र आदि।

विज्ञानः आकाश की बातें, योग के आसन आदि।

अनुवादः इतना जो जानो, कौन जाग रहा है आदि।

लोक साहित्यः मारवाड़ के मनोहर गीत, घाघ और भड्डरी तथा हमारा ग्राम साहित्य (तीन भाग) आदि।

आचरण -संबंधीः अंग्रेज़ी शिष्टाचार

ग्राम-जीवनः किसानों के काम की बातें, मिट्टी के सुखदायक घर और नमूने का गाँव आदि।

इन सभी में त्रिपाठी जी का सर्वाधिक मुखर एवं उभरा हुआ रूप कवि रूप ही है। इस इकाई का मूल विषय भी कवि रामनरेश त्रिपाठी का अध्ययन करना है। अतः त्रिपाठी जी के काव्य के मूल स्वरों का मूल्यांकन करेंगे। यों त्रिपाठी जी का ब्रजभाषा पर भी पर्याप्त अधिकार था, किन्तु भाव और भाषा का सरल, सहज एवं जो प्राझल रूप उनके खड़ी बोली काव्य में मिलता है वह युग की आवश्यकता के अनुरूप ही था। काव्य के माध्यम से जन-जन को जगाने तथा हृदय में उत्साह का संचार करने वाले त्रिपाठी जी ने लोकमंगल, समाज सुधार और राष्ट्रोद्धार का जो बीड़ा उठाया, उसमें पूर्णतः सफलता हासिल की। सामाजिक नव-उद्‌बोधन के इस कवि ने काव्य के सृजनात्मक धरातल पर मानवतावादी भूमिका निभाई। डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल ने लिखा भी है- ''नवयुग की चेतना से उनके काव्य ओत-प्रोत हैं। उनमें प्रातः काल की अरूणाभ एवं वसंत की ''सौरभ'' श्लथ मादकता एवं मोहकता है। कवि ने प्राचीन घिसी-पिटी रूढ़ि परम्परा का अनुसरण नहीं किया है। उसने पौराणिक या ऐतिहासिक कथानकों को न अपनाकर, मौलिक नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा के द्वारा काल्पनिक कथानक की सृष्टि की। खंड काव्य में प्राचीन शास्त्रीय नियमों की संकुचित परिधि का प्रथम बार उल्लघंन किया गया, इस दिशा में आपने मार्ग निर्देशन का कार्य किया है। इस दृष्टि से त्रिपाठी जी खंड काव्य के क्षेत्र में एक नवीन परम्परा का प्रवर्त्तन करते हैं। मौलिक कथानक के अंतराल में विशद् एवं गहन भावों को संवार कर सजा देने में उन्हें अद्‌भुत सफलता मिली है। वे इस क्षेत्र में अकेले हैं।'' (पं. रामनरेश त्रिपाठी का काव्य पृष्ठ 70)।

ईश्वर मातृभूमि एवं मानव की आराधना में अगाध विश्वास रखने वाले त्रिपाठी जी जितने श्रद्धालु-देशभक्त हैं, प्रकृति की सुन्दरता से भी उतने ही अभिभूत हैं। ''बालक-विनय'' कविता में मातृभूमि के दुख दर्द दूर करने का दर्द देखिए-

i) मन में देशभक्त बनने की उठी अटल अभिलाषा है,
सफल मनोरथ करो दयामय, हमें तुम्हारी आशा है।

ii) ईश्वर भक्ति-लोक सेवा है एक अर्थ दो नाम।
वन में बस कैसे हो सकता है, मनुजोचित काम।
पृथ्वी पर सुख-शांति बढ़ाना देकर निज श्रम शक्ति
मनुष्यता का अर्थ यही है और यही हरि-भक्ति।

एक तरफ वे राष्ट्र को ही भगवान तथा राष्ट्र सेवा को ही सबसे बड़ा धर्म मानकर देश एवं देशवासियों के लिए प्राणोत्सर्ग करने में ही मोक्ष का अनुभव करते हैं तो दूसरी तरफ विश्व-बंधुत्व और प्रेम की उदात्तता में ही अपनी समस्त श्रद्धा का वचन दोहराते हैं। डॉ. राममूर्ति शर्मा ने लिखा भी है- ''उन्होंने मानव जीवन की मूल एवं सशक्त प्रवृति प्रेम को भी अत्यन्त उदात्त रूप प्रदान किया है। उनका प्रेम व्यक्ति के संकुचित घेरे से निकलकर समस्त विश्व को अपनी बांहों में समेटे हुए है। उनके प्रेमी विरह में आँसू बहाकर समस्त संसार को डूबोने की अपेक्षा, विरह के दुःख से सन्धि कर जन तथा राष्ट्र के कल्याण में जुट जाते हैं। राष्ट्रीय भावना उनके साहित्य का प्रमुख स्वर है, परन्तु वह संकीर्ण विचारों से आक्रान्त नहीं है, उसमें औदात्य है। उनका प्रकृति चित्रण भी अनेकबन्धी एवं मौलिक है। यह छायावादी प्रकृति-वैभव के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि भी प्रस्तुत करता है। उनकी प्रकृति संघर्ष से ऊबे व्यक्ति के लिए मुँह छिपाने की आश्रयस्थली न होकर मानव को कर्मरत होने की प्रेरणा प्रदान करती है। यह केवल त्रिपाठी जी के प्रकृति-चित्रण की ही विशेषता है।'' (रामनरेश त्रिपाठी और उनका साहित्य; पृष्ठ 353)

त्रिपाठी जी के काव्य में मिलने वाली इन सभी विशेषताओं पर अलग से हम आगे चलकर विचार करेंगे। यहाँ संक्षेप में उनके प्रबंध एवं मुक्तक काव्य का स्वरूपगत परिचय प्राप्त कर लेना उचित होगा।

सर्वप्रथम हम त्रिपाठी जी के प्रबंध (खंड) काव्यों का परिचयात्मक स्वरूप देखते हैं। कवि ने तीन प्रबंध काव्यों की रचना की- मिलन (1917), पथिक (1920) तथा स्वप्न (1928)। तीनों खंड काव्यों का प्रणयन कवि ने राष्ट्रीय पृष्ठभूमि पर ही किया है। कवि की मौलिक कल्पना से इनके कथानकों की उद्‌भावना हुई तथा स्वच्छन्द- प्रवृत्ति ने उन्हें सुसज्जित किया। हिंदी साहित्य के इतिहास में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते भी हैं- ''मिलन, पथिक और स्वप्न नामक इनके तीनों खंड काव्यों में इनकी कल्पना ऐसे मर्म-पथ पर चली है, जिस पर मनुष्य मात्र का हृदय स्वभावतः ढलता आया है। ऐतिहासिक और पौराणिक कथाओं के भीतर न बंधकर अपनी भावना के अनुकूल स्वच्छंद संचरण के लिए कवि ने नूतन कथाओं की उद्‌भावना की है।''

''मिलन'' काल्पनिक कथानक पर लिखा गया प्रेम एवं राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत खंड काव्य है। इसकी लोकप्रियता का कारण भी उस समाज के पाठक वर्ग का इन भावनाओं के प्रति आंतरिक झुकाव है। पाँच सर्गों में विभक्त इस काव्य में भाषा की सरलता और सहजता इसके सौंदर्य में श्रीवृद्धि करती है।

''पथिक'' पाँच सर्गों में विभक्त एक सुंदर खंड काव्य है, जिसमें कर्मवाद, देश के और समाज के प्रति प्रतिबद्धता एवं कर्तव्य, भावना, त्याग तथा बलिदान की महत्ता का काव्यात्मक संदेश दिया गया है। त्रिपाठी जी का गांधीवाद के प्रति झुकाव भी यहाँ परिलक्षित होता है। कवि ने रामेश्वरम की यात्रा के फलस्वरूप मन में उत्पन्न प्रकृति सौंदर्य की अद्‌भुत छटाएँ यहाँ अंकित की हैं।

''स्वप्न'' पाँच सर्गों में लिखा गया खंड काव्य त्रिपाठी जी की का मीर-यात्रा का परिणाम है। इसमें देश के दुख-दैन्य से चिंतित नायक की पीड़ा भी है तो नायिका के शौर्य और त्याग की गाथा भी चित्रित है। नारी यहाँ पति की कर्त्तव्य-विमुखता पर जागृति का मूल मंत्र फूंकती है और देश की आन-रक्षा के पथ पर बलि होने की प्रेरणा देती है।

इस प्रकार तीनों ही प्रबंध रचनाओं में कवि स्वदेश की स्वतंत्रा प्राप्ति और उसकी रक्षा के लिए जूझने वाले वीर युवकों और वीरांगनाओं के प्रेरणादायी चरित्र उजागर करता है। रुचिकर, मौलिक तथा कल्पना-प्रसूत आख्यान मानवीय आदर्शों को समेटकर मर्म तक उतर जाते हैं। पात्रों का जमघट नहीं और उनका जीवन-यात्रा में प्रेम-पथ पर अग्रसर होना अत्यंत मनोवैज्ञानिक है। युवावस्था के प्रेममय स्वप्न तथा राष्ट्रीय हीन दशा जनित सेवा का अदम्य उत्साह-त्रिपाठी जी के नायकों का प्रमुख गुण है। नायिकाओं के चरित्र भी कम महत्वपूर्ण नहीं। देश-प्रेम का तूफान उनके भी हृदय में उठता है और वह घर बैठे पति की कायरता को ललकारती हुई उसे जागृति प्रदान करती है। ''स्वप्न'' की नायिका ''सुमना'' अपने पति से कहती है-

तुम हो वीर पिता माता के
वीर पुत्र मेरे जीवन-धन
तुम से आशायें कितनी हैं
जन्म भूमि को हे अरिमर्दन।

इसी प्रकार, ''पथिक'' में भी कवि देश के परतंत्र और परमुखापेक्षी लोगों को प्रताड़ित करते हुए पूछता है-

मस्तक ऊँचा हुआ तुम्हारा कभी जाति-गौरव से?
अगर नही तो देह तुम्हारी तुच्छ अधम है भाव से।

पथिक का तो नायक ही गांधी जी की प्रतिच्छवि बन जाता है। ''साथ न दो नृप का कोई उसके अधर्म शासन में'' कहकर कवि अहिंसा, क्षमा और असहयोग की बात को बल देता है। कवि इसीलिए कहता भी है-

हुए स्वतंत्र सुसभ्य सच्चारित सच्चे देश निवासी।
घर-घर में सुख शांति छा गई रही कहीं न उदासी।
एक शुद्ध सच्चे प्रेमी ने आत्म-शक्ति-साधन से।
मुक्त कर दिया एक देश को नरक तुल्य शासन से।

''उत्साह'' भाव का सुंदर प्रस्तुतिकरण ''मिलन'' काव्य के उस कथन में देखा जा सकता है, जहाँ नायक-नायिका देश की विफलता पर आँसू नहीं बहाते। उसे दूर करने के लिए उत्साह संजोते हैं-

देखा उसने उसी भांति के अगणित नर-कंकाल
चिपके पेट रीढ़ से जिनके चुपके पुचके गाल
विजया ने प्रण किया सुदृढ़ होकर प्रयत्न भरपूर
तन-मन से इस दीन दशा का कष्ट करूँगी दूर।

इस प्रकार ''ईश्वर का प्रतिबिम्ब प्रेम है, प्रेम हृदय आलोक'' कहने वाले त्रिपाठी जी आदर्श प्रेम की स्थापना भी करते हैं तो- ''लोहू गर्म हुआ वीरों का, फड़क उठे जब अंग। नशा वीरता का चढ़ आया देख रक्त का रंग'' जैसी उक्तियों से युवा-मन को फड़कने पर मज़बूर भी करते हैं। अतः कह सकते हैं कि त्रिपाठी जी ने अपने खंड काव्यों के माध्यम

से एक स्वतंत्र पथ तथा नई दिशा का निर्माण किया। निश्चित ही वे राष्ट्रीय-जागरणकारों के अग्रदूत कहे जा सकते हैं।

त्रिपाठी जी की काव्य यात्रा का श्रीगणेश सन् 1911 में लिखी गई सात कविताओं वाली लघु-पुस्तिका ''बालक-सुधार-शिक्षा'' से माना जाता है। बालकों के लिए ईश्वर-भक्ति, देश-प्रेम, माता-पिता की सेवा, त्याग, बलिदान तथा समय का सदुपयोग आदि विषयों पर कवि शिक्षक बनकर भावभिव्यक्ति करता है। यहीं से इनके मुक्तक काव्य लेखन का भी प्रारंभ हुआ। इसके बाद ''मारवाड़ी मनोरंजन'' जिसमें दस स्फुट कविताएं हैं, ''मारवाड़ का प्रभात'', ''शरद-वर्णन'' आदि में प्रकृति का सुंदर चित्रण किया गया है। ''ऊष्ट्राष्टक'' रेगिस्तान के जहाज ऊँट पर लिखे गए आठ छंदों का संग्रह है। कवि की ''भयंकर-विवाह'' नामक कविता अनमेल-विवाह के विषय को बखूबी बखान करती है। सन् 1914 में कवि ने ''कविता-विनोद'' संग्रह दिया और जग प्रसिद्ध प्रार्थना ''ईश्वर-वंदना'' भी इसी में संकलित है। त्रिपाठी जी मुक्तकों के माध्यम से समाज में व्याप्त अंध-विश्वासों, रूढ़ियों, कुरीतियों और जीर्ण-शीर्ण मान्यताओं पर प्रहार भी करते हैं तो बालकों-युवकों में देश-प्रेम, सदाचार तथा अनुशासन का भाव भी जाग्रत करते हैं। वे सच्चे मार्गदर्शन एवं दत्त-चित्त समाज सुधारक की भूमिका निभाते हुए दीन-दुखियों, अबल-असहायों के प्रति सहानुभूति भी व्यक्त करते है -

ना मन्दिर में, ना मस्जिद में, ना गिरजे के आसपास में,
ना पर्वत पर, ना नदियों में, ना घर बैठे, ना प्रवास में,
ना कुंजों में, ना उपवन के शांति- भवन या सुख-निवास में,
ना गाने में, ना बाने में, ना आँसू में, नहीं हास में,
ना छंदों में, ना प्रबंध में, अलंकार ना अनुप्रास में,
खोज ले कोई राम मिलेंगे दीन जनों की भूख प्यास में।

इसी प्रकार त्रिपाठी जी ने अन्य चर्चित मुक्त रचनाओं ''आर्य संगीत शतक'' (1912 ई.), ''क्या होमरूल लोगे'' (1918 ई.) तथा ''मानसी'' (1927 ई.) में भी जीवन की छोटी-बड़ी अनुभूतियों को अत्यंत भाव-प्रवणता से चित्रित किया गया है। वह देश कौन सा है, मातृभूमि की जय, महापुरुष, स्वतंत्रता का दीपक तथा स्वदेश गीता आदि रचनाओं में राष्ट्रीयता प्रधान है तो प्रार्थना, अन्वेषण, चमत्कार, राम कहाँ मिलेंगे, परलोक, जागरण, संसार-दर्पण तथा श्याम की शोभा आदि में आध्यात्म प्रधान है। चन्द्र, पुष्प-विकास, प्राकृतिक सौन्दर्य तथा स्वप्न में तैर रहा है जैसी रचनाओं में प्रकृति की मनोरम छटा है तो उदारता, नीति के दोहे, मित्र महत्ता, पुस्तक-महत्ता, पुस्तक, मनुष्य-पशु आदि में नीति-दर्शन प्रधान है। इसी प्रकार का मीर, नया नखशिख तथा हैट के गुण आदि में व्यंग्य प्रधान है। ब्रिटिश सरकार पर किए गए व्यंग्य देखिए कितने जीवंत हैं-

i) ''डिनर'' ''लंच'' ''टी'' तीन हैं, राजा के हथियार
चतुर-चतुर बच के गये, घायल हुए गंवार।
X X X X

ii) दृग को, दिमाग को, ललाट को, श्रवण को भी
धूप से बचाती, अति सुख पहुँचाती है।

सिर पर है हैट रख चाहे जो अनर्थ करो,
हैट यह ईश्वर की दृष्टि से बचाती है।

अतः स्पष्ट है कि त्रिपाठी जी का जीवन ही कवितामय था। कविता सदैव उनके जीवन की प्रेरणा रही है और इसी सी उन्होंने जीवंतता तथा उदात्तता का मार्ग प्रशस्त किया। यही उनके साहस और शक्ति का कारण बनी तथा इसी ने उन्हें ''जीवन की आग'' में जलना और निरंतर आगे बढ़ना सिखाया। त्रिपाठी जी की इस काव्य- सृष्टि की प्रमुख - विशिष्टताओं को ही अब हम देखेंगे।

बोध प्रश्न-1

1. कवि रामनरेश त्रिपाठी के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक युगीन-परिवेश पर सात आठ पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. रामनरेश त्रिपाठी की बहुमुखी प्रतिभा का काव्य से इतर किन-किन विधाओं में परिचय मिलता है। तीन पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3. त्रिपाठी जी की प्रमुख प्रबंध-कृतियों के नाम एवं रचना वर्ष लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4. रामनरेश त्रिपाठी जी के व्यक्तित्व की तीन प्रमुख विशेषताओं का परिचय पाँच पंक्तियों में दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास -1

1. त्रिपाठी जी द्वारा विरचित ''ना मंदिर में, ना मस्जिद में, ना गिरजे..... .....''कविता का अंश आपकी इसी इकाई के भाग 6.4 में उद्धत है। इस अंश का भावार्थ लगभग आठ पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

6.5 काव्य सौंदर्यः प्रमुख स्वर

सत्याग्रह पथ के अथक यात्री तथा राष्ट्रीय आन्दोलनों के सक्रिय कार्यकत्ता रामनरेश त्रिपाठी का काव्य क्षेत्र जितना विशाल है, उसकी प्रवृति उतनी ही मूल्यवान भी। त्याग और बलिदान के पथ पर लोगों को अग्रसर करने के लिए पथ-प्रदर्शक एवं उद्‌बोधक गीत गाकर जागरण का शंख फूंकने का जो उदात्त कार्य त्रिपाठी जी ने किया, वह हम सभी भारतीयों के लिए वरदान सिद्ध हुआ। अज्ञान, रूढ़िवाद, दासत्व और नैराश्य के व्यामोह में भटकी जनता में काव्य- माधुरी से नूतन प्राण संचरित करने वाली इस महाशक्ति ने विदेशियों के अनीति एवं अत्याचारपूर्ण शासन में झुलसती जन-सामान्य की चीत्कारों को ही वेदना की वाणी नहीं दी, स्वतंत्र एवं समृद्ध भारत की आत्मविश्वासकारी छवि को भी निखारा-संवारा। सत्य, निष्ठा, अहिंसा और प्रेम के गांधीवादी आदर्श उन्हें साम्प्रदायिक सद्‌भाव की प्रेरणा के लिए उत्साहित कर रहे थे-

है एक ही सबका पिता, अल्लाह ही भगवान है,
नाम ही का भेद है, वह राम ही रहमान है।

स्वाधीनता के इस सिपाही ने भारत की मुक्ति को विश्व मानवता की मुक्ति बनाकर मंगल कामना एवं उदात्त दृष्टि का प्रचार किया। काव्य माला में संघर्ष, बलिदान एवं त्याग की प्रेरणा के पुष्प पिरोकर कवि ने स्वतंत्रता का गलहार बनाया। अहिंसक क्रांन्ति की चेतना से जागरण का बीज बोया। आज़ादी से पहले का भारत और पूरे विश्व को सभ्यता एवं आचरण की सीख देने वाली जनता का निरंतर हो रहा पतन कवि को सालता है और वह उसे प्रताड़ित भी करता है-

शान्ति, शिक्षा, शीलता, शालीनता,
खो चुके तुम शूरता स्वाधीनता,
जो निरूधम है भला वह क्या जिया?
हाय तुमने जन्म लेकर क्या किया?

यह फटकार लगाने वाला महाकवि सन् 1920 में भावी स्वतंत्रता के पूर्व-दर्शन कर लेता है-

शासन का सब भार लिया जनता ने अपने कर में,
परम हर्ष, आनन्द, मोद, सुख व्याप्त हुआ घर-घर में।

इस प्रकार पूरी कविता सृष्टि में राष्ट्रीय भावना, सामाजिक चेतना, उदात्त प्रेम, स्पंदित प्रकृति, इतिहास एवं सांस्कृतिक चेतना तथा लोक साहित्य की मार्मिक अभिव्यक्ति आदि कई पक्षों को उकेरा गया है। यहाँ हम काव्य के इन्हीं पक्षों की सौन्दर्यानुभूति का दर्शन करेंगे।

6.5.1 राष्ट्रीय-भावना का प्रसार

त्रिपाठी जी के काव्य में राष्ट्रीय भावना के विविध परिपार्श्व दिखाई देते हैं जिनमें देशभक्ति, देशप्रेम, राष्ट्रीय जागरण, जन उद्‌बोधन, नारी जागृति, देश के निर्माता एवं स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सम्मान, विदेशी शासन की आलोचना तथा सांस्कृतिक गौरव का मुखर गान आदि के सहज दर्शन किए जा सकते हैं। राष्ट्रीयता की उत्ताल तरंगों से तंरगायित हृदय के इस महाकवि ने मिलन, पथिक, स्वप्न या फिर मुक्तकों में भी विदेशी शासन का डटकर विरोध करते हुए सहज रहने का मूल मंत्र दिया-

जिस पर गिर कर उदर दरी से तुमने जन्म लिया है
जिसका खाकर अन्न सुधा-सम नीर-समीर पिया है
वह स्नेह की मूर्ति दयामयी माता-तुल्य मही है
उसके प्रति कर्त्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है।

त्रिपाठी जी के देश प्रेम में प्राकृतिक सौन्दर्य का उल्लास भी है तथा उच्च विचार और जन-सामान्य की बहुमुखी समृद्धि की मंगल भावना भी निहित है। उनकी राष्ट्र भावना में उन्मुक्त हृदय की वह पवित्र अभिव्यक्ति है जिसमें देश की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक हलचल का सक्रिय स्वरूप साकार हुआ है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा भी है- ''स्वदेश-भक्ति की जो भावना भारतेन्दु के समय से चली आती थी उसे कल्पना द्वारा रमणीय एवं आकर्षक रूप त्रिपाठी जी ने ही प्रदान किया। त्रिपाठी जी के तीनों काव्य देश भक्ति के भाव से प्रेरित है। देश भक्ति का यह भाव उनके कई पात्रों को जीवन के कई क्षेत्रों में सौन्दर्य प्रदान करता दिखाई पड़ता है- कर्म के क्षेत्र में, प्रेम के क्षेत्र में भी। वे पात्र कई तरफ से देखने में सुन्दर लगते हैं। देश भक्ति का रसात्मक रूप त्रिपाठी द्वारा प्राप्त हुआ इसमें सन्देह नहीं!'' (हिंदी साहित्य का इतिहास; पृष्ठ 407)

त्रिपाठी जी राष्ट्रीय कविता के क्षेत्र में भविष्य-दृष्टा एवं स्रष्टा कवि माने जाते हैं। ''मिलन'' एवं ''पथिक'' में वे स्वतंत्रता का स्वप्न ही देखते रहे हैं। मातृभूमि पर शीश चढ़ाना कवि को सौभाग्य जान पड़ता है-

कवि ने भावी निर्माण के लिए एक तरफ तो अतीत के गौरव गान गाकर सुप्त क्रांति को जगाया तो दूसरी तरफ तत्कालीन दुर्दशा और अभावों का पर्दाफाश करते हुए जागृति का उद्‌घोष किया। शरीर एवं बुद्धि का ही नहीं, विचार एवं विवेक का परिष्कार तथा संवर्द्धन करने की प्रेरणा दी। कभी वे-''हम तो कदम मिलाए उस राह पर चलेंगे, बापू ने जो बताई सुख शान्ति की डगर है'' कहते हुए देश निर्माण की त्यागमयी राह चुनते हैं तो कभी भारतीय युवकों को ललकारते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति की गूंज पैदा करते हैं-

सब को स्वतंत्र कर दे यह संगठन हमारा,
छूटे स्वदेश की ही सेवा में तन हमारा।
हम प्राण होम देंगे, हँसते हुए जलेंगे,
हर एक सांस पर हम आगे बढ़े चलेंगे।
जब तक पहुँच न लेंगे तब तक न सांस लेंगे
वह लक्ष्य सामने है पीछे नहीं टलेंगे।

त्रिपाठी जी की राष्ट्रीय चेतना पर विचार करते हुए डॉ. अनिल उपाध्याय ने ''रामनरेश त्रिपाठी के साहित्य में राष्ट्रीय भावना'' शीर्षक वाले अप्रकाशित शोध प्रबंध में लिखा है- ''उनकी राष्ट्रीयता का मूल रूप देशवासियों को उद्‌बोधित करने में दिखाई देता है, जिसके अंतर्गत उन्होंने भारतीयों को परतंत्रता जन्य दारूण दुख'' को दूर करने के लिए प्रेरित किया है। इस दृष्टि से उन्होंने वाणी और साहित्य, दोनों का सहारा लिया और जेल भी गए। अपने समकालीन अनेक कवियों की तुलना में उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय धारा को

देशव्यापी बनाने में विशेष महत्वपूर्ण कार्य किया और युवकों तथा युवतियों को इस कार्य के लिए तैयार किया।'' (पृष्ठ 318)।

इस प्रकार त्रिपाठी जी ने राष्ट्रीय भावना के प्रचार-प्रसार में ही अपने को पूर्णतः समर्पित कर दिया। शिक्षा-दीक्षा द्वारा, भारतीयता का भावना द्वारा, अधिकार की जागृति द्वारा, शोषण के खिलाफ पैदा की गई गूंज द्वारा, भ्रष्ट एवं दुराचारी नीतियों पर किए गए व्यंग्य द्वारा, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक असंतुलन पर किए गए प्रहारों द्वारा कवि अपना दायित्व निभाता रहा। ऐसे कवि की राष्ट्रीय शक्ति एवं उद्दाम चेतना को उन्हीं के शब्दों में दोहराया जा सकता है-

जिनके नस नस में विद्युत थी,
आंखो में था क्रोध प्रज्वलित।
छाती में उत्साह भरा था,
वाणी में था प्राण प्रवाहित
मातृभूमि के लिए हृदय में
जिनमें भरी शक्ति थी अविरल।
ग्राम-ग्राम से निकल निकल कर,
ऐसे युवक चले दल के दल।

6.5.2 सामाजिक चेतना एवं सुधार दृष्टि

त्रिपाठी जी के युग में सामाजिक परिवेश अत्यन्त अधोमुख एवं असंतोषजनक था। निर्धनता, अभावग्रस्तता, बेरोज़गारी, मशीनी-त्रास, अनमेल विवाह, बाल-विवाह, छूआछूत, भेदभाव, दहेज प्रथा, ईर्ष्या एवं द्वेष तथा स्वार्थ-साधना आदि से नैतिक पतन हो रहा था। ज़मीदार कृषकों का खून चूस रहा थे। अशिक्षा ने लोगों को भटकाव की ओर धकेल दिया था। ऐसे भयावह एवं घातक वातावरण में राजा राममोहन राय ने सुधार की जो उल्लेखनीय भूमिका निभाई वही भूमिका साहित्य के माध्यम से निभाने वाले सृजकों में रामनरेश त्रिपाठी भी थे। समाज-उन्नति का स्वप्न वे सदैव देखते रहे। वे सामाजिक कुरीतियों का विद्रोह करके समाज को एक उज्वल पथ की ओर उन्मुख करते रहे। अनमेल विवाह पर विचार व्यक्त करते हुए कविता-कौमुदी में उन्होंने लिखा भी है- ''जैसे अजगर चल फिर नहीं सकता वैसे ही वृद्ध भी। जैसे अजगर अपने शिकार को निगल जाता है वैसे ही वृद्ध पति बेचारी अबोध कन्या को निगल जायेगा।''(पाँचवा भाग; पृष्ठ 229) राष्ट्र की छोटी-छोटी सामाजिक बुराइयों को त्रिपाठी जी ने समय-समय पर आड़े हाथों लिया-

इस जाति पाति की दूत ने प्रतिभापन यश हर लिया,
हम सब को अन्धी भेड़ कर अन्ध कूप में भर दिया।

भारतेन्दु काव्य में यही चेतना मुखर और द्विवेदी युग में आकर प्रसार पाने लगी। कवि ने ''उठो और आलस को त्यागो अपनी दशा सुधारो, तेजहीन निर्बल समाज में फिर नव जीवन डारो'' कहकर आलसी एवं निष्क्रिय लोगों को प्रेरित किया। तत्कालीन कृत्रिमता पर निडरता से प्रहार किया। कृत्रिमता से बढ़ रहे दंभ, पाखंड और अधर्म को चुनौती दी। हम अपने हीन भावों के कारण ही गुलाम हैं और यही कारण है कि चंद लोग हम पर राज कर रहे हैं। कवि इस तथ्य को ''भूल गए अपने बड़प्पन की याद, हम मुट्ठी भर मानवों की मुट्ठी में समाए हैं'' कहकर जन-जन को जगाता है। हिन्दू-मुसलमान तथा इसाई में एकता स्थापित करने के लिए वे प्रयत्न-रत दिखाई देते हैं'-

तू ज्ञान हिन्दुओं में ईमान मुस्लिमों में
तू प्रेम क्रिश्चियन में है सत्य तू सुजन में।

सामाजिक दुख, अभाव, निर्धनता और बेबसी भी उन्हें विकल कर देती थी। वे करोड़ों दुखियों का यथार्थ चित्रण करते हुए कहते हैं-

अन्न नहीं है, वस्त्र नहीं है, रहने का न ठिकाना,
कोई नहीं किसी का साथी अपना और बेगाना।

चारों ओर मची त्राहि-त्राहि और व्याकुल नर-नारी कवि को जनजीवन की बुराइयों से लड़ने-जूझने के लिए बाधित करते हैं। त्रिपाठी जी किसानों की दुर्दशा देखकर भी अत्यंत खिन्न हैं। अंग्रेज़ी शासन-व्यवस्था के कारण पीड़ित कृषक का दुख देखिए-

चिंतित हैं आश्चर्य चकित हैं, कृषक विकल हैं दुख से,
कौन काढ़ लेता है उनका, कौर अचानक मुख से।

''जगत के जीवन-प्राण किसान'' को त्रिपाठी जी आत्मविश्वास का मंत्र देते हैं और क्रान्ति से स्वप्न बांटते हैं-

अब तुम उठो संभालों अपना, गुण गौरव, सम्मान
दूर करो अविवेकी जग का, यह मिथ्या अभिमान।

इसी प्रकार श्रमिक, मज़दूर, नौकरी पेशा आदि सभी लोगों की व्यथा पीड़ा को कवि ने देखा और महसूस किया। राजा-प्रजा तथा पूँजीपति-गरीब का यह असंतुलित-समीकरण त्रिपाठी जी को हमेशा बेचैन किए रहा। राजा के अत्याचार तथा प्रजा की दर्दनाक दशा, शोषण के षडयंत्र और अपराध के अत्याचार सभी ने कवि को वाणी दी-

शासक दल असहाय प्रजा को, घोर कष्ट देता है।
रक्षक से भक्षक बनता है, और सरबस हर लेता है।

इसी प्रकार ज़मींदार, पूँजीपति राजा, शोषक तथा प्रशासनिक अधिकारियों के अन्याय अत्याचार भी कवि की लेखनी को स्वर देते हैं। सामाजिक, आचरणहीनता, मानवीय गुणों का ह्रास, स्वार्थ लिप्सा, विकृत-सभ्यता तथा स्तर-भेद आदि कितने ही सामाजिक रोग हैं, जिन्हें त्रिपाठी जी निडरता एवं निर्भयता से अपनी लोह-लेखनी का शिकार बना कर प्रताड़ित करते रहे। वे इन समस्त अवगुणों को कटु-शब्दों में ललकारते रहे। कवि की इस समाज-सुधारवादी दृष्टि से ही उनके राष्ट्र प्रेम एवं मानवीय दायित्व का भी पता चलता है।

6.5.3 प्रेमानुभूति की उदात्तता

रामनरेश त्रिपाठी जी स्वच्छन्द काव्य धारा के उन प्रमुख कवियों में हैं जिन्होंने प्रेम को ईश्वरीय वरदान के रूप में चित्रित करने का सफल प्रयास किया। त्रिपाठी जी के युग में प्रसाद जी की ''प्रेम पथिक'' एवं ''आँसू'' तथा पंत जी की ''ग्रंथि'' आदि रचनाएँ भी प्रेम विषयक उदात्तता को स्थापित कर रही थी। इसी परिवेश को समृद्ध करते हुए त्रिपाठी जी ने भी ''मिलन'', ''पथिक'' और ''स्वप्न'' जैसी कृतियों के माध्यम से प्रेमाख्यानक काव्य परंपरा को आगे बढ़ाया। प्रेम को जीवन का आदर्श बिन्दु तथा मानव की जीवनाकांक्षा की वरदायिनी शक्ति मानने वाले त्रिपाठी जी ने इसे सौंदर्य का कुंज तथा सक्रियता का स्त्रोत बनाकर प्रस्तुत किया। जीवन को गति देने वाले इस परम तत्व की महत्ता को कवि रूपायित करते हुए कहता है-

गंध-विहीन फूल है जैसे चन्द्र चन्द्रिका हीन।
यों ही फीका है मनुष्य का जीवन प्रेम-विहीन।
प्रेम स्वर्ग है स्वर्ग प्रेम है प्रेम अशंक अशोक।
ईश्वर का प्रतिबिम्ब प्रेम में प्रेम हृदय आलोक।।

त्रिपाठी जी सच्चे प्रेम के पक्षधर थे। भेदभाव, ऊँच-नीच तथा स्तरीय अंतर का प्रेम-लोक में कोई स्थान नहीं है। उनका प्रेम अभिन्न व्यापक एवं विस्तृत दुनिया का प्रेम है। ''अति सूधों सनेह को मारग है'' की विरासत तथा आत्मबलि एवं त्याग जिसमें विरह ही काम्य

है, मिलन नहीं। यही कवि के लक्ष्य हैं। मिलन तो प्रेम का अंत है। जबकि प्रेम तो अनन्त यात्रा है-

मिलन अन्त है मधुर प्रेम का
और विरह जीवन है।
विरह प्रेम की जागृति गति है,
और सुषुप्ति मिलन है।।

त्रिपाठी जी का प्रेम नायक-नायिका को समाज और राष्ट्र से जोड़ता है। करुणा और आत्मीयता से समृद्ध करता है। देशभक्ति के संघर्ष को प्रेरणा देता है। शारीरिक सौंदर्य के प्रति सहज-स्वीकार्य भाव लेकर चलने वाला प्रेम ही ''मिलन'' में धीरे-धीरे उदात्तता की ओर उन्मुख हो जाता है। कवि ''प्रेम विचित्र वस्तु है जग में, अद्‌भुत शक्ति निधान'' कहकर उसकी प्रभावशीलता को अनुभूत करता है। कवि की प्रेम-दृष्टि देखिए-

i) जिस पर दया-दृष्टि करते हैं मंगलमय भगवान
पूर्ण प्रेम-पीड़ा से पीड़ित होता है वह प्राण।

ii) व्याकुल हुआ प्रेम पीड़ा से, जिसका कभी न प्राण,
भाग्यहीन उस निष्ठुर का है, उर सचमुच पाषाण।

कवि प्रेम भरी चितवन को अमृत से सिंचित मानता है। अपरिमित शक्ति वाला यह प्रेम अत्यंत कल्याणकर है। ''अहो प्रेम में तृप्ति नहीं है, केवल है अनन्त आकर्षण।'' कहने वाला कवि व्यक्तिगत प्रेम को स्वदेश प्रेम तक और फिर ईश्वर प्रेम तक ले जाता है। वासनात्मक प्रेम की चर्चा कर कवि उसकी परिणति उदात्तता में करता है। सच्चे प्रेम पथिक को ''किन्तु पहुँचना उस सीमा तक जिसके आगे राह नहीं'' कहकर वे स्वयं भी प्रेम की चिर-गति तथा गतिशील प्रकृति को ही स्वीकार करते हैं। अतः त्रिपाठी जी का प्रेम वर्णन लौकिक से अलौकिक की, सामान्य से विशेष की ओर फिर विशेष से जन-जन तक की यात्रा को अभिव्यक्ति देता है। प्रियतम कण-कण और जन-जन वासी बन जाता है और यही उदात्तता की चरम सीमा है-

जन जन से प्रेमी को दिखती, है प्रियतम की कान्ति
इससे उसे लोक सेवा में, मिलती है अति शांति।

6.5.4 प्रकृति -प्रेम

प्रकृति के पुजारी, रामनरेश त्रिपाठी का हृदय प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य से पूर्णतः आपूरित रहा है। उनके प्रत्येक काव्य का नायक प्रकृति का अनन्य-प्रेमी और उपासक है। प्रकृति के सौन्दर्य पूर्ण रूपों का वे अत्यन्त विशद् वर्णन करते हैं। द्विवेदी युग के सर्वोत्तम प्रकृति अनुरागी त्रिपाठी जी के काव्य में प्रकृति कहीं आलम्बन बन कर आती है तो कहीं उद्‌दीपन। कहीं प्रकृति का संवेदनात्मक-रूप उभरता है तो कहीं प्रतीकात्मक। विशेषता यह है कि प्रकृति का दृश्यांकन कवि अत्यंत स्वाभाविक एवं विश्वसनीय ही नहीं, अपितु मोहक एवं आकर्षक ढंग से भी करता है-

i) कोकिल का आलाप, पपीहे की विरहाकुल बानी।
तोता मैना का विवाद, बुल-बुल की प्रेम कहानी।

ii) बार-बार बक पंक्ति गमन से उज्ज्वल फूलों वाली।
मेघपुष्प वर्षा से धूमिल घटा क्षितिज पर काली।

कवि प्रकृति वर्णन में हृदय से रम जाता है और उसकी सौंदर्यमयी आनन्दानुभूति चिरस्थायी बन जाती है। ''पथिक'' की रचना कवि रामेश्वर के मंदिर के निकट विस्तृत जल-राशि के तट पर करता है तो ''स्वप्न'' की रचना के समय वह हिम-पर्वतों से घिरे

काश्मीर की घाटियों में विचरण करता है। स्फुट रचनाओं में भी प्रकृति सम्बन्धी-अनुभूति मानसिक संवेदनाओं और भावनाओं के अनुरूप ही अभिव्यक्ति पाती है। कहीं संध्या का, तो कहीं रात्रि का दृश्य मुखर होता है। कहीं वर्षा का तो कहीं लालिमा युक्त प्रभात स्वतंत्र एवं आलम्बन रूप में चित्रित होता है। ''पथिक कवि'' देश भ्रमण में प्रकृति के मनोहारी दृश्यों से भाव-विभोर होता जान पड़ता है-

i) कहीं श्याम चट्टान, कहीं दर्पण सा उज्वल सर है।
कहीं हरे तृण खेत, कहीं गिरि श्रोत प्रवाह प्रखर है।

ii) नीचे नील समुद्र मनोहर ऊपर नील गगन है।
घन पर बैठ बीच में विचरूँ यही चाहता मन है।

कभी कवि ''होने लगी वृष्टि रिमझिम कर, अविरत मूसलाधार'' कहते हुए अपनी मनोदशाओं को अभिव्यक्ति देता है तो कभी ''पल्लव- लता कुसुम- कलियों को करती थी अति प्यार'' कहकर वियोगिनी नायिका की मानसिक भावना को भी साकार रूप देता है। प्रकृति का आलंकारिक वर्णन भी त्रिपाठी जी के कल्पना- कौशल का परिचायक है। कहीं प्रकृति का अप्रस्तुत विधान, प्रस्तुत को रूपायित करता है तो कहीं प्रकृति का आलंकारिक रूप ही शोभा-वृद्धि का कारण बन जाता है। ''पंकज माला सी प्रणयी के मृदु गल -बहियाँ-डाल'' में उपमा की छवि मिलती है तो कहीं कहीं अतिशय- कल्पना मोह उसे ऊहात्मक भी बना देता है। ''बीती निशा उषा उठ भाई, पहन सुनहला चीर'' कहकर कवि प्रकृति-नायिका का सुंदर मानवीय रूप प्रस्तुत करता है। ''मानवीकरण'' पर तो त्रिपाठी जी की अनूठी पकड़ है। अनेकों उदाहरण देखें जा सकते हैं-

अंशुमाली के शुभागमन की, बेला समझ समीप
नभ में बुझा चुके सूर भी निज-निज घर के दीप।

इसी प्रकार ''फूल पंखुड़ी में पल्लव में प्रियतम रूप विलोक'' और ''बार-बार उचक-उचक लहरों में सिन्धु'' आदि उदाहरण भी देखे जा सकते हैं। प्रकृति कहीं पृष्ठभूमि बनकर काव्य में आती है तो कहीं उपदेशात्मक रूप लेकर उभरती है। कहीं ''प्रकृति रूप में आती है कहीं रहस्यात्मक रूप में। कुल मिलाकर कह सकते हैं कि प्रकृति पुत्र त्रिपाठी जी के काव्य में प्रकृति प्रेरणा बनकर कर्मपथ पर अग्रसर होने की राह प्रशस्त करती है। प्रकृति के मधुर तथा विराट बिम्ब त्रिपाठी जी की खास पहचान हैं और इसी कारण वे द्विवेदी युग के प्रमुख प्रकृति प्रेमी माने जाते हैं।

6.5.5 सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक चेतना

त्रिपाठी जी के काव्य में सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक चेतना के भी दर्शन होते हैं। राष्ट्रीय भावना एवं देश प्रेम का उद्देश्य लेकर कवि संस्कृति के सभी अंगों का विशद वर्णन करता है तो ''हिमालय'' आदि के संदर्भ में अपनी आध्यात्मिक दृष्टि का भी परिचय देता है। त्रिपाठी जी अंग्रेज़ी सभ्यता से दूषित ''युगीन संस्कृति'' का चित्रण भी करते हैं तो भारतीय संस्कृति के प्रति पूर्ण आस्था एवं श्रद्धा का भाव भी रखते हैं। ईश्वर भक्ति को वे लोक-सेवा के पर्याय मानते हैं। ''मैं ढूंढता तुझे था जब कुंज और वन में, तू खोजता मुझे था तब दीन के वतन में'' कहकर वे इसे पुष्ट भी करते हैं। ''मनुष्यता का अर्थ'' समझाने वाला यह गांधीवादी सिपाही सेवा धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं मानता-

सेवा धर्म मुख्य है जग में,
लोक शान्ति प्रद काज।

''रक्त पात करना पशुता है, कायरता है मन की'' कहते हुए वे धार्मिक दृष्टि के प्रति जितने सजग रहे हैं ''हम भाई बहिनें हैं'' कविता में भाईचारे और एकात्मभाव के प्रति भी उतने ही जागरूक जान पड़ते हैं।-

आसमान है एक हमारा, एक नाव पर घर है,
है एक ही चिराग हमारा और एक बिस्तर है।

इसी प्रकार, मानवतावादी दृष्टिकोण तथा सत्य और ज्ञान का अवलंब ग्रहण करने का आग्रह भी उन्हें भारतीय संस्कृति के आख्याता रूप में स्थापित करते हैं। गीता का कवि पर गहरा प्रभाव रहा है। ज्ञान-कर्म और भक्ति के सम्मिश्रण में उनकी अटूट आस्था रही है। संसार को परीक्षा-स्थल मानने वाले त्रिपाठी जी मानव को संघर्षरत रहने की प्रेरणा देते हैं-

यह संसार मनुष्य के लिए परीक्षा स्थल है।
दुख है प्रश्न कठोर, देख कर होती बुद्धि विकल है।।

इसी प्रकार, ''एक-एक तृण दिखलाता है जगदीश्वर की सत्ता'' तथा ''उसी की ही ध्वनि गूँज रही है, अणु परमाणु गगन में'' जैसी पंक्तियाँ भी कवि के इसी दर्शन को रूपायित करती है। पुनर्जन्म में कवि का अटूट विश्वास है। इसीलिए- ''निर्भय स्वागत करो मृत्यु एक विश्राम स्थल'' कहकर वे मानव को भारतीय दार्शनिक भावनाओं की ओर प्रेरित भी करते हैं। नीति संबंधी काव्य रचनाओं में भी कवि के सांस्कृतिक मूल्यों की शक्ति का परिचय सहज ही मिल जाता है।

त्रिपाठी जी ने ऐतिहासिक गरिमा को भी काव्य-बद्ध करके अपने सभ्य-देश की अतुलनीय छवि का मनोहारी चित्रण किया। ज्ञान, धर्म एवं श्रद्धामयी आस्था का प्रतीक यह भारतवर्ष कैसा अद्‌भुत देश है-

सबसे प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी
जगदीश का दुलारा वह देश कौन-सा है?
पृथ्वी निवासियों को जिसने प्रथम जगाया
शिक्षित किया सुधारा, वह देश कौन-सा है?

सभ्यता और गौरव का, महाभारत और रामायण का तथा त्याग और बलिदान का अन्यतम उदाहरण है भारत। सारा संसार इसका दास था और ये सभी का स्वामी। ''आह्‌वान'' कविता में कवि कहता भी है- ''क्या तुम भूल गए, जब तुम थे स्वामी और जगत था दास''। आज देश की पराधीनता से कवि दुखी है। इसीलिए वह भारतीय इतिहास के गौरव-चिह्नों को पुनः रेखांकित करते हुए विश्व-मानचित्र पर उकेरना चाहता है। कभी वह ''हम थे कभी मनुष्य की संतान के मुकुट'' कहकर जगाता है तो कभी देश के वीरों की स्तुति गाकर उत्साह-संचार करता है-

जिसमें दधीचि दानी, हरिश्चन्द्र कर्ण से थे,
सब लोक का हितैषी वह देश कौन सा है।''

इस प्रकार द्रोण, अर्जुन, श्रीकृष्ण एवं भीष्म जैसे कर्मयोगियों की भारत भूमि का कवि मुक्त-कंठ से प्रशस्ति गान करता है। इसी प्रकार कवि महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, बल्लभ, चैतन्य महाप्रभु, नानक, कबीर, दयानन्द सरस्वती, कालिदास, माघ, तुलसीदास, सूरदास, चाणक्य एवं तानसेन आदि अनेक गौरव चिन्हों का गुणगान करते हुए उनके द्वारा प्रदर्शित पथ का स्मरण कराता है। यही नहीं कवि को भारतीय इतिहास की वीरांगनाएं भी गौरव-गान के लिए प्रेरित करती हैं और वह दुर्गा, आहिल्या, लक्ष्मीबाई, पद्‌मिनी, वीरमती, काशल्या, शकुन्तला, रूक्मिणी आदि माताओं की देन को प्रणाम करता है। स्पष्ट है कि कवि समग्र काव्य में किसी न किसी रूप में भारतीय ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गौरव का गुणगान करता ही रहा है। भारतीय संस्कृति से उन्हें अपार प्रेम था और ऐतिहासिक विरासत के प्रति वे पूर्णतः समर्पित थे।

6.5.6 लोक साहित्य का मर्म

लोक सहित्य के अंतर्गत लोक गीतों का स्थान प्रमुख होता है। इन्हीं लोक गीतों में लोक जन की, उनके परिवेश एवं परिस्थिति की, समय एवं स्थल की तथा कर्म एवं संस्कारों की लय-युक्त अभिव्यक्ति होती है। त्रिपाठी जी के लोक गीत इसी की साक्षात मिसाल है। उनका जन्म भी गाँव में ही हुआ। सन् 1925 में ''सरस्वती'' पत्रिका में सर्वप्रथम उनके दो लोकगीत प्रकाशित हुए और फिर तो कवि को प्रोत्साहन और प्रेरणा मिलती रही। इसी का परिणाम है कि त्रिपाठी जी ने ''काश्मीरी ग्राम गीत'', ''मारवाड़ के मनोहर गीत'', ''राजस्थानी झीलों के लोक गीत'', कविता कौमुदी (पाँचवां भाग) तथा हमारा ग्राम साहित्य (दो भाग)- जैसे ग्रंथ विशुद्ध लोक गीतों से ही सुसज्जित किए हैं।

त्रिपाठी जी के लोक गीतों को यों तो कई भागों में बाँटा जा सकता है, किन्तु स्थूलताः मुण्डन, जनेऊ, नहछू तथा विवाह संबंधी ''सोहर'' (मंगल गीत) गीत लिखे हैं। यही नहीं, कवि पुत्र-कामना, पति का परस्त्री से संबंध, ननद-भाभी के झगड़े, पति-परदेस-गमन, नेग-बधाई, व्रत-पूजा आदि कई विषयों पर सुन्दर एवं मनोहारी गीत लिखता है। कभी कवि अविवाहित कन्या के पिता का वह रूप चित्रित करता है, जिसमें उसे नींद नहीं आती और कन्या के कारण ही उसका सिर भी झुक जाता है-

i) कुछ रे सुतीला कुछ जागीला बेटी नींदो न आवे
जाहि घरे कन्या कुंवारि बेटी नींद कैसे आवे।

ii) गिरि नवे पर्वत नवे हम तो ना नइयो
बेटी तोहरे कारन हम जग में माथ नवाये।।

उसी प्रकार निःसन्तान व्यक्ति का उपहास, गर्भवती स्त्री के लक्षण, यज्ञोपवीत वर्णन, बेमेल विवाह, ऋतु और व्रत संबंधी गीत, मेले के गीत, विभिन्न जातियों के गीत और श्रम-परिश्रम के गीत आदि कितने ही उदाहरण देखे जा सकते हैं। सीधी-सुबोध भाषा, स्वाभाविक चित्रण, स्वाभाविक चित्रण, लय और गीत का अद्भूत सम्मिश्रण, सुंदर उपमाएँ तथा अत्यन्त सटीक कहावतों का प्रयोग सभी कुछ गीतों की मधुर अभिव्यक्ति में चार चाँद लगा देते हैं। ''बारहमासा'' की कुछ पंक्तियाँ देखिए कितनी सुन्दर हैं-

प्रात में कातिक पूरा है तुसार
मोहि छोड़ि कन्त भये वनिजार
मैं नू झूलौंगी।

माघ मांस घन परा है तुसार, काँपइ हाथ और काँपइ गात
काँपइ सेज तुरगहि खाट, कि मैं नाहीं जैहों झूलने तुम जाव
मैं न झूलौंगी।

कुल मिलाकर कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति एवं वातावरण से प्रभावित लोक साहित्य की मार्मिक रचना करने वाले कवियों में रामनरेश त्रिपाठी प्रमुख है। ग्राम गीतों का यह अद्भुत-सौन्दर्य कवि की सौन्दर्य दृष्टि एवं अनुपम कल्पना शक्ति का प्रमाण है।

बोध प्रश्न 2

1. त्रिपाठी जी की कविता में व्यक्त राष्ट्रीय भावना पर आठ पंक्तियों लिखिए।

.....

.....

.....

.....

2. त्रिपाठी जी की समाज-सुधार दृष्टि को स्पष्ट करने वाले कोई दो काव्यांश लिखिए

.....

.....

.....

.....

.....

3. रामनरेश त्रिपाठी ने अपने काव्य में प्रेम के उदात्त रूप की स्थापना की है। लगभग आठ पंक्तियों में सिद्ध कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4. त्रिपाठी जी के काव्य में व्यक्त प्रकृति-चित्रण पर आठ पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

5. त्रिपाठी जी ने लोक-साहित्य के अंतर्गत किन-किन प्रमुख विषयों को चुना? चार पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

6.6 रचना-विधानः विविध आयाम

आधुनिक साहित्य के इतिहास में और विशेषतः खड़ी बोली के कवियों में त्रिपाठी जी का नाम विषय ही नहीं भाषा एवं शैली की विशिष्टता के कारण भी अत्यन्त गौरव से लिख जाता है। साहित्यिक एवं परिमार्जित भाषा तथा अभिव्यजंना की कलात्मक -दृष्टि के कारण ही त्रिपाठी जी ने अपनी एक विशिष्ट पहचान भी बनाई। सहज- स्वाभाविक एवं विशिष्ट-आलंकारिक-दोनों ही प्रयोग विषय एवं संदर्भ के अनुकूल करते हुए त्रिपाठी जी प्रेषणीय को रमणीय एवं प्रभावोत्पादक बनाकर प्रस्तुत करते हैं । भाषा, शब्द शक्ति, गुण, अलंकार, मुहावरे, लोकोक्तियाँ और छंद आदि सभी उपादानों का प्रयोग इतना सुंदर एवं सार्थक बन गया है कवि के अभिव्यजंना-कौशल का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। यहाँ हम संक्षेप में इन सभी पक्षों पर विचार करेंगे।

6.6.1 काव्य भाषा

त्रिपाठी जी युगीन स्थितियों एवं आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर काव्य सृजन कर रहे थे और विषय को पूर्णतः प्रेषणीय बनाने के लिए उन्होंने जो भाषा चुनी और अपनाई- उसकी आत्मा को भली प्रकार परखा। सहज और सरल व्यक्तित्व वाले कवि ने यह समझ लिया कि संस्कृत-तत्सम-प्रधान भाषा हिंदी की पर्याय नहीं बन सकती। यही कारण है कि उन्होंने अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध की भाँति संस्कृत-बहुल हिंदी को न चुनकर **व्यावहारिक एवं लोक प्रचलित भाषा** चयन किया। उच्चारण- सुविधा एवं सरसता को भी ध्यान में रखकर कवि पदों को तोड़ता-जोड़ता है। श्रुति मधुर बनाने का प्रयास भी इसमें दिखाई देता है। उनकी भाषा में अर्द्ध तत्सम एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग-बाहुल्य सहज ही देखा जा सकता है-

नृप की **निठुर** आज्ञा से सूचित थी सब सेना।
x x x x x
देश प्रेम से **पूरण** प्लावित उनका उच्च ह्रदय है।
x x x x x
किया निकाल देश सीमा से बाहर बड़े **जतन** से ।

वर्ण-मैत्री में ''विरह-वितााड़ित, ''सुषमा-सौन्दर्य'' तथा ''विनोद-विभूषित'' जैसे कई प्रयोग सरलता एवं प्रभावोत्पादकता बढ़ाते हैं। इसी प्रकार ''राग-रथी, रवि-राग पथी, अविराम विनोद बसेरा'' में **संस्कृत पदावली** का प्रयोग भी देखा जा सकता है।

त्रिपाठी जी ने **बिम्बों** के सुंदर एवं सटीक प्रयोग से भाषा को अन्यतम शक्ति प्रदान **की** है। ये भाव-गर्भित शब्द-चित्र सर्जक कल्पना के परिचायक ही हैं। सरल, मिश्र जटिल तथा पूर्ण आदि कई बिम्बों के सहज-दर्शन इस काव्य में होते हैं। दुख-दैन्य के शब्द-चित्र बनाता यह बिम्ब देखिए-

धधक रही सब ओर, भूख की ज्वाला है घर घर में
मांस नहीं है निरी साँस है शेष अस्थि पंजर में।।

इसी प्रकार ''जाता हूँ मैं, जल विहार की, तरसी में तरूणी को लेकर'' जैसी पंक्तियों में सरल बिम्ब उभरकर आते हैं। त्रिपाठी जी ने काव्य भाषा में नाद-सौन्दर्य का भी चमत्कारिक प्रयोग किया है-

बहता है अविराम निरन्तर कल-कल स्वर से नाला।
x x x x
गिरता उठता फेन बहाता, करता अति कोलाहल हर-हर।

इसी प्रकार त्रिपाठी जी ने अपनी काव्य भाषा को समृद्ध एवं शक्तिमान बनाने के लिए गुल, आमद, हुक्म, हौंसला, मसोसकर, मुहताज, हाकिम, खुलासा तथा दरवाज़ा आदि कितने ही **उर्दू के शब्द** प्रयुक्त किए और पौढ़ाया अठिलाठी, ढौर मीचु, सेऊंगी, असवारी, माती, पठाऊँ वांच आदि **देशज शब्दों** को भी प्रयोग किया। उड़ीक एवं बूढ़ जैसे **पंजाबी भाषा के शब्द** भी प्रयुक्त किए। त्रिपाठी जी भाषा-सौष्ठव को निखारने के लिए **उपसर्ग-प्रत्यय** का भी सुंदर प्रयोग करते हैं। प्रसाद गुण पूर्ण, सरल और सरस भाषा के सृजक रामनरेश त्रिपाठी ने इन्हीं भाषिक गुणों से रचनाओं को भावमयी और मार्मिक बना दिया है। संयोग श्रृंगार, करूण और वियोग आदि भावों की अभिव्यक्ति के लिए वे कोमल कान्त पदावली का प्रयोग करते हैं तो भावनाओं में संघर्ष, विद्रोह तथा उत्साह के प्रतिपादन हेतु **पौरुष (ओज)** भाव का समाहार करते हैं-

पथिक नाम की सुधि आते ही परम क्रोध चढ़ आया।
दृग विस्फारित नाक प्रस्तावित हुई प्रकम्पित काया।।

इसी प्रकार **प्रसाद एवं माधुर्य** के उदाहरण भी अनेकों उपलब्ध हैं। आचार्य शुक्ल ने कहा भी है- ''पंडित रामनरेश त्रिपाठी का नाम भी खड़ी बोली के कवियों में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। भाषा की सफाई एवं कविता के प्रसाद गुण पर उनका बहुत ज़ोर रहता है''। (हिंदी साहित्य का इतिहास; पृष्ठ 704)

इस प्रकार कह सकते हैं कि खड़ी बोली पर त्रिपाठी जी का अच्छा अधिकार था और उन्होंने उसे निखारा-सँवारा भी। शब्द-शक्ति, मुहावरे-लोकोक्तियाँ तथा अलंकार-छंद पर हम अभी आगे विचार करेंगे किन्तु यहाँ इतना कहना उचित होगा कि ब्रजभाषा, अवधी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, बंगला, मराठी एवं गुजराती भाषाओं का अच्छा ज्ञान रखने वाले त्रिपाठी जी की भाषा गंभीर विषयों के प्रतिपादन में पूर्णतः सफल एवं समर्थ हैं।

6.6.2 लाक्षणिक एवं व्यंजनात्मक शैली

त्रिपाठी जी की शैली विषय और भाव के अनुरूप बदलती रहती है। स्वाभाविक, सहज एवं सरल शैली उनकी विशिष्ट पहचान है तो लाक्षणिक एवं व्यंजनात्मक प्रस्तुति भी उनके कलात्मक-दृष्टिकोण की परिचायक है। यों अभिधा के प्रयोग में उनका मन अधिक रमा है, किन्तु प्रकृति- चित्रण में वे लक्षणा का सुंदर प्रयोग करते हैं। ''विद्युत-सी खिलखिला पड़ी वह'' में ''खिलखिलाना'' शब्द अपनी व्यंजनात्मकता के साथ भाव-लक्षित होकर लाक्षणिक-वैचित्र्य प्रस्तुत करता है। ''सरस विमल निरलस कलरवमय'' जैसी पंक्तियों में कई जगह मृदुल शब्दों का स्वाभाविक सौन्दर्य भी शैली को सरस बनाता है। त्रिपाठी जी वर्णनात्मक शैली का प्रयोग भी करते हैं और भावनात्मक शैली का भी। मूलतः कवि जनजीवन को ऊँचा उठाने के लिए प्रभावोत्पादक-शैली में काव्य सृजन करता है। खंड काव्यों में वर्णनात्मक शैली देखी जा सकती है और मुक्तकों में भावात्मक शैली। हिंदी के प्राचीन और नवीन छन्दों को अपनाते हुए कवि अधिकारपूर्ण प्रयोग करता है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा तथा दृष्टांत आदि अलंकार शैली को सुसज्जित कर देते हैं। कवि ने संदर्भ के अनुकूल ही सरस, अलंकृत एवं समास शैली का चयन भी किया है।

अतः त्रिपाठी जी ने अपनी शैली को अधिकाशतः मुख्यार्थ का बोध कराने वाली शक्ति ''अभिधा'' से ही सम्पन्न रखा है। किन्तु जहाँ कहीं भी वे लक्षणा और व्यंजना का प्रयोग करते हैं, पूरे विश्वास एवं अधिकार से करते हैं।

6.6.3 लोकाक्ति एवं मुहावरे

त्रिपाठी जी के काव्य में लोकोक्ति एवं मुहावरों का प्रयोग भाषा की शक्ति संवर्द्धन के लिए किया गया है। सरसता, जीवंतता एवं शक्तिमान बनाने का दायित्व निभाने में लोकोक्ति और मुहावरे काव्य में भावाभिव्यंजना की अद्‌भूत क्षमता भर देते हैं। त्रिपाठी जी ने लोक गीत और लोक कथाओं में तो लोकोक्तियों का तो हृदयस्पर्शी प्रयोग किया ही है, साथ ही खंड काव्य एवं मुक्तकों में भी इनकी रमणीयता देखी जा सकती है। इन लोकोक्तियों में गागर में सागर भरने की विशेषता तो है ही, नीति का प्रेरक पुट भी जी भर कर मिलता है। सांसारिक व्यवहार-पुटता और सामान्य बुद्धि के दुर्लभ दर्शन भी यहाँ होते हैं। मनोरंजन करने वाली पहेलियों को भी त्रिपाठी जी ने कई जगह प्रयुक्त किया है। ''हमारा ग्राम साहित्य'' तथा ''घाघ और भड्डरी'' नामक संग्रहों में लोकोक्तियों और पहेलियों का विविध विषयों की मार्मिक अभिव्यक्ति के लिए प्रयोग किया गया है। कवि किसानों के वर्षा ज्ञान, खेती संबंधी, स्वास्थय संबंधी तथा यात्रा, शुभाशुभ, छींक, छिपकली आदि से सम्बद्ध सामाजिक साहित्यिक कहावतों का प्रयोग बहुत सुंदर ढंग से करता है। ब्रज, अवधी, भोजपुरी तथा राजस्थानी प्रदेशों की कहावतें भी संग्रह में संजोता है। अवधी की एक कहावत देखिए-

सूक्करवारी बादरी, रहे सनीचर छाय
तो यों भारवे भड्डरी, बिन बरसे न जाय।

इसी प्रकार ''जा दिन जेठ में बहे पुरवाई, ते दिन सावन धूरि उड़ाई'', ''चमके पच्छिम उत्तर और, तब जान्यों पानी है, जौर'', ''हथिया पूँछ डोलावे, घर बैठे गेहूँ आवे'', ''लाग बसंत, ऊख पकंत'' जैसी कई कहावतें कवि ने प्रस्तुत की हैं। सामाजिक कहावतें भी त्रिपाठी जी के समाज-ज्ञान का परिचायक है। '' जो विधवा है करै सिंगार, ओहि से सदा रहयो हुशियार'', ''बिन धरती घर भूत का डेरा'', ''बहन घर भाई कुत्ता, सासरे जमाई कुत्ता'', ''अति भक्ति चारे का लच्छन'', ''आंत भारी, माथ भारी'', ''ओछे की प्रीत बालू की भीत'' तथा ''चोर चोर मौसेरे भाई'' इसी प्रकार की कहावतें हैं। इसी प्रकार, त्रिपाठी जी ने कुछ पहेलियों का भी बहुत सुंदर प्रयोग किया है। ''पाजामे'' संबंधी सुंदर पहली देखिए-

दुइ मुँह छोट एक मुँह बड़ा, आधा मानुष लीले खड़ा।
बीच बीच लगावे फांसी, नाम सुने तो आवे हांसी।।

मुहावरों का भी कवि ने संदर्भ एवं विषय के अनुकूल प्रयोग कर काव्य भाषा को अलंकृत एवं प्रभावी बनाया है। **गाल बजाना, बाट जोहना, एक पंथ दो काज, गाज गिरना, मन मसोस कर रह जाना, दूध की लाज रखना, मन की कली खिलना, कौड़ी को मुहताज** होना आदि कई प्रयोग देखे जा सकते हैं। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-

i) कुछ है वाह-वाह के प्रेमी निर्भय गाल बजाते।
X X X X

ii) हार गई **मैं बाट जोहती** आये नाथ न मेरे ।
X X X X

iii) ईश्वर भक्ति लोक-सेवा है **एक अर्थ दो नाम।**
X X X X

iv) हाय-हाय इस अधम स्वार्थ पर **पड़ी न अब तक गाज।**
X X X X

v) किया जिन्होंने स्वर्ण भूमि को **कौड़ी के मुहताज।**
X X X X

6.6.4 अप्रस्तुत विधान

त्रिपाठी जी के समग्र काव्य में अलंकार भाषा की पुष्टि एवं राग की परिपूर्णता के लिए भी प्रयुक्त हुए हैं। इनके सहज प्रयोग से भावों का उत्कर्ष ही स्पष्ट हुआ है। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अनुप्रास, विरोधाभास, मानवीकारण दृष्टान्त तथा प्रतीक आदि सहज एवं साधारण अलंकारों का ये श्रृंगार भाषा के सौंदर्य को और निखारता है। विरोधाभास अलंकार का सौन्दर्य देखिए-

i) अब जाना है प्रिये तुम्हारे मन में है वह अद्‌भुत पावक
समीपस्थ को शीतल है जो किन्तु दूरवर्ती को दाहक

X X X X

ii) मेरे करूणा, निधि का आसन गरम होगा,
कौन जाने कब मेरे शीतल उसास से।

इस प्रकार, ''तल-तरंगित, सरित सलिल में उसकी प्रभा ललाभ'' में छेकानुप्रास की छटा है तो ''प्रेम स्वर्ग है, स्वर्ग प्रेम है, प्रेम अशंक अशोक'' में उपमेयोपमा का निखार। नवीन उपमानों की अद्‌भुत कल्पना ''करुणा सी मृदु धर्म गीत सी, शुद्ध कल्पना सी सुख संकुल'' में देखी जा सकती है तो ''आँखें विष में बूढ़ रही-सी थीं जलहीन सजल हो'' में श्लेष का चमत्कार है। ''विष'' यहाँ अश्रु एवं विरह-विष का अर्थ लिये है। यहाँ अलंकारों का प्रयोग,

अभिव्यक्ति की स्पष्टता, भावों की प्रभविष्णुता और भाषागत प्रेषणीय धर्म के निर्वाह के लिए किया गया है। सादृश्य, साधर्म्य, प्रभाव एवं विरोध मूल आदि कई प्रकार के अलंकार प्रयुक्त हुए हैं। कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं-

उत्प्रेक्षाः निकल रहा है जल निधि तल पर दिनकर बिम्ब अधूरा।
कमला के कंचन मंदिर का मानों कान्त कंगूरा।।

उदाहरणः गन्ध विहीन फूल है जैसे चन्द्र चन्द्रिका-हीन।
यों ही फीका है मनुष्य का जीवन प्रेम-विहीन।।

दृष्टान्तः आते हैं विघ्नों के झोंके बारम्बार प्रचण्ड।
गिरते हैं तरु पर रहता है गिखिर अटल अखंड।।

मानवीकरणः प्रतिक्षण नूतन वेष बनाकर रंग-बिरंग निराला।
रवि के सम्मुख थिरक रही थी नभ में वारिद बाला।।

x x x x

हा! यह फूल किसी दिन अपनी अनुपम सुन्दरता से गर्वित
आया था जग में उमंग से किसी वासना से आकर्षित।।

उल्लेखः प्राण वल्लभे! प्रिये! सुवदने, इन्दीवर-आयत-दल लोचनि
प्रेम-तरंगिणि। चित-विहारिणी, हे सुभगे! भव ताप विमोचिनी

6.6.5 छन्द-विधान

कविता के लिए लयबद्ध होना उसकी अमरता का सूचक होता है। छन्द-विधान सामान्य मनोवेगों में ध्यान सम्बन्धी सजगता तथा संवेदनशीलता की अभिवृद्धि में सहायक होता है। त्रिपाठी जी ने भी इसी दृष्टि से अपने समग्र काव्य में छंदों को अपनाया है । अधिकाशंतः वे मात्रिक छंदों का ही चयन करते हैं और इसी से संगीतात्मकता की अधिक संभावना बनती है। वे ''पथिक'' में **''सार''** छन्द का, ''स्वप्न'' में 16-16 मात्राओं पर यति और अन्त में एक गुरू, दो लघु वाले ''समान सवाई'' का तथा ''मिलन'' में **''सारसी''** छंद का प्रयोग करते हैं। कहीं-कहीं लय भंग भी होती जान पड़ती है किन्तु फिर भी छन्द विधान ने काव्य को नियमित करने की सफल भूमिका निभाई है।

त्रिपाठी जी ने ''उर्दू के बहरों'' को भी काव्य के नियमन के लिए अपनाया है। ''अन्वेषण'', ''हार ही में जीत'' जैसी कविताओं में यही छंद प्रयुक्त हुआ है। इनके अतिरिक्त स्फुट रचनाओं में ''तोटक, ''विधाता', ''छप्पय'' तथा ''ताटंक'' आदि छन्दों का भी सफलतम प्रयोग है। ''शरद-तंरगिनी'' कविता में संस्कृत के वर्णिक छन्दों का प्रभाव स्पष्ट है। ऐसे छन्द जिनमें क्रिया अंतिम चरण में आती है, वे भी कवि को अत्यन्त प्रिय रहे हैं। ''स्वप्न'' में इनका अधिक प्रयोग हुआ है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ये सभी छन्द त्रिपाठी जी की काव्य भाषा को शक्ति और नियमन प्रदान करते हैं। कुछ दोष होने पर भी छन्द विधान की संगीतात्मकता और लयात्मकता उसे ताकत देती है।

6.7 रामनरेश त्रिपाठी का योगदान

इस समग्र विवेचन के बाद यह तो स्पष्ट ही है कि कवि रामनरेश त्रिपाठी के काव्य में सत्य, शिव और सौंदर्य का सुंदर समन्वय मिलता है। युगीन स्थितियों का अनुभव कवि को प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति की प्रेरणा देता है और कवि अपने काव्य से आदर्श तथा औदात्य के संस्कार पैदा कर व्यक्ति को राष्ट्रहित एवं समष्टि कल्याण की राह दिखाता है। ''मिलन'' में कवि प्रेम, करूणा, साहस, आत्मबलिदान, जनसेवा तथा सर्वहारा वर्ग के लिए सहानुभूति जैसे मूल्यों की स्थापना करता है तो ''पथिक'' और ''स्वप्न'' के माध्यम से भी देश भक्ति,

स्वातंत्र्य-कामना, प्रकृति प्रेम, आत्म-त्याग, व्यक्ति-स्वातंत्र्य, चरित्र की उदात्तता तथा आदर्श जीवन दृष्टि की ओर उन्मुख करने का उद्देश्य रखता है। इसी प्रकार मुक्तकों में भी जन-ऐक्य का बल जनता को दिखाया गया है। प्रेम चिन्तन में कवि औदात्य और आत्मिकता का समावेश करता है। निष्क्रिय-समाज को कर्मयोग का संदेश देकर कवि समाज-सुधारक की भूमिका भी निभाता है। इसके अतिरिक्त राजनैतिक यथार्थ, व्यंग्य-प्रहार, नारी उद्धार, जात पात के भेद का अंत आदि कई दायित्व कवि एक साथ निभाता है। क्रान्ति का यह दूत एक तरफ अंग्रेज़ों के अत्याचार के खिलाफ आवाज़ बुलन्द करता है तो दूसरी तरफ अहिंसक परिवर्तन की ''लौ'' जलाने की निष्ठा प्रदान करता है।

प्रकृति सौंदर्य, अभिव्यंजना-कौशल तथा लौकिक साहित्य को मार्मिक अभिव्यत्ति सभी कुछ कवि की मौलिक एवं अन्यतम प्रतिभा तथा सौन्दर्य-दृष्टि को प्रकाशित करते हैं। निश्चित ही त्याग और भोग, विलास और सादगी, वीरता और अहिंसा, स्वच्छंदता और संयम के बीच एक स्वस्थ संतुलन ही त्रिपाठी जी की कविता का प्रमुख स्वर है। त्रिपाठी जी के खंड काव्यों के कथानक एकरसता लिए हुए भी अपनी काव्य यात्रा को सफलता से पूरा करते हैं। प्रेम, विरह तथा पात्रों का आदर्श चरित्र सभी कुछ कवि की दृष्टि के परिचायक हैं। हालांकि त्रिपाठी का समग्र काव्य किसी विलक्षण-प्रतिभा का सूचक नहीं, किन्तु फिर भी, भावनात्मक- उद्वेलन देकर कर्त्तव्य -पथ की ओर उन्मुख होने की प्रेरणा देने वाला यह काव्य संसार अपने आप में महान है। हिंदी-साहित्य संसार त्रिपाठी जी के इस योगदान के कभी विस्मृत नहीं कर सकता।

बोध प्रश्न 3

1. पंडित रामनरेश त्रिपाठी को कौन-कौन सी भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। दो पंक्तियों में लिखिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

2. त्रिपाठी जी की काव्य-भाषा पर एक उदाहरण देकर पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

3. त्रिपाठी जी के काव्य में प्रयुक्त मुहावरे और लोकोक्तियों से काव्य सौन्दर्य में अपार वृद्धि हुई है। दो-दो उदाहरण देकर कुल आठ पंक्तियाँ लिखिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

4. त्रिपाठी जी के काव्य की शोभा वृद्धि करने वाले अप्रस्तुत विधान में से किन्हीं दो अलंकारों का उदाहरण देते हुए आठ पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

6.8 सारांश

- बहुमुखी-प्रतिभा से सम्पन्न, द्विवेदी-युगीन प्रमुख कवि पंडित रामनरेश त्रिपाठी अपने युग-परिवेश से प्रभावित होकर ही नहीं, उसे प्रभावित करके मार्ग-प्रदर्शन के लिए साहित्य सृजन कर रहे थे।
- राजनीति, समाज, धर्म, शिक्षा तथा संस्कृति के क्षेत्र में त्रिपाठी जी ने साक्षात तथा विविध विधाओं के माध्यम से संघर्ष करते हुए नवजागरण का बीज बोया और अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- एक विशाल एवं विस्तृत फलक पर साहित्य सृजन करने वाले इस संस्कृति पुत्र एवं इतिहास प्रेमी ने मनुष्य को प्रकृति की गोद में बिठाकर भारतीयता के गौरव गान का पाठ सुनाया।
- खंड काव्य एवं मुक्तककाव्य पर पूरे अधिकार एवं आत्मविश्वास से लेखनी चलाने वाले भारती-पुत्र पंडित रामनरेश त्रिपाठी जी ने राष्ट्रीय चेतना तथा सामाजिक सुधार के दायित्व को कविता के माध्यम से बाखूबी निभाया।
- उदात्त प्रेम की स्थापना, प्रकृति प्रेम का उल्लास और लोक साहित्य का मर्म इनके काव्य में कूट-कूटकर समा गया है। कवि ने नैतिक-मूल्यों और शाश्वत् सत्य की प्रतिष्ठा में ही साहित्य-समर्पण किया है।
- काव्य भाषा तथा शब्द शक्ति, लोकोक्ति-मुहावरे, अलंकार एवं छंद आदि उपादानों पर कवि का अद्भुत नियंत्रण ही नहीं गहन एवं पैनी समझ भी है। इसी कारण वे अपने मतंव्य को सफलतापूर्वक संप्रेषित कर स्वयं को मील के पत्थर की तरह स्थापित कर पाते हैं।

6.9 शब्दावली

भविष्योन्मुखी : भविष्य की ओर उन्मुख रहने वाला या सोचने वाला।

उद्विग्नता : परेशान, चिन्तित या खिन्न।

नवनवोन्मेषशालिनी : जो हर पल और जब देखें नवीन लगे।

जन-उद्‌बोधन : जन-सामान्य में जागृति की लहर जगाना।

प्रेमाख्यानक : प्रेम की कथाओं वाले।

ऊहात्मक : ऊबाऊ या नीरस।

संस्कृत बहुल हिंदी : वह हिंदी जिसमें संस्कृत के शब्दों का आधिक्य हो।

अलौकिक-शक्ति : इस लोक से परे अर्थात परलोक की शक्ति या ईश्वरीय शक्ति।

6.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

डॉ. राममूर्ति शर्मा, रामनरेश त्रिपाठी और उनका साहित्य; प्रथम संस्करण, सन् 1972, आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली-51।

डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, पं. रामनरेश त्रिपाठी का काव्य; द्वितीय संस्करण, 1976, भारती - भाषा प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली।

इंदरराज बैद ''अधीर'', रामनरेश त्रिपाठी, प्रथम संस्करण, 1987, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।

डॉ. अनिल कुमार उपाध्याय, पं. रामनरेश त्रिपाठी के साहित्य में राष्ट्रीय भावना (अप्रकाशित शोध प्रबंध), सन् 1969, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

डॉ. रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल, रामनरेश त्रिपाठीः व्यक्तित्व और कृतित्व।

सम्मेलन -पत्रिका; (श्रद्धांजलि अंक)

6.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. देखिए भाग 6.2
2. देखिए भाग 6.4
3. देखिए भाग 6.4
4. देखिए भाग 6.3

बोध प्रश्न 2

1. देखिए उपभाग 6.5.1
2. देखिए उपभाग 6.5.2
3. देखिए उपभाग 6.5.3
4. देखिए उपभाग 6.5.4
5. देखिए उपभाग 6.5.6

बोध प्रश्न 3

1. देखिए उपभाग 6.6.1
2. देखिए उपभाग 6.6.1
3. देखिए उपभाग 6.6.3
4. देखिए उपभाग 6.6.4